

SU मेधा

“न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।”
(इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र कुछ भी नहीं है।)

वर्ष १, अंक १, आषाढ-पौष | संवत्सर : विश्वावसु | विक्रम संवत् २०८२ | युगाब्द ५१२६

VOLUME 1 ISSUE 1 | JULY - DECEMBER 2025



STUDENT VOICES • CAMPUS STORIES • FUTURE LEADERS

Chief Patron



Shri Jai Shankar Mishra
Chancellor, Sushant University

Patron



Prof. Rakesh Ranjan
Vice Chancellor,
Sushant University

Co-Patron



Dr. Sanjeev Kumar Sharma
Pro-Vice Chancellor and Registrar,
Sushant University

Editor-in-Chief



Prof. (Dr.) Jagat Narayan Giri
Dean - Student Welfare, Sushant University

Student Editorial Team



Ayush Aggarwal (Team Head)
School of Business



Tarini Kaushik
School of Law



Sakshi Aggarwal
School of Business



Atharv Tiwari
School of Business



Divyanshi Srivastav
School of Art &
Architecture



Vrishti Aggarwal
School of Art &
Architecture

माननीय कुलाधिपति का संदेश



सुशांत विश्वविद्यालय की प्रथम अर्धवार्षिक ई-पत्रिका SU मेधा (जुलाई - दिसंबर 2025) के प्रकाशन पर मुझे अत्यंत हर्ष और गर्व का अनुभव हो रहा है। यह पत्रिका विश्वविद्यालय के शैक्षणिक, सांस्कृतिक और वैचारिक विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। SU मेधा केवल एक पत्रिका ही नहीं है, वरन् यह ज्ञान, विचार और उपलब्धियों की भी एक सशक्त अभिव्यक्ति है, जो विश्वविद्यालय के छात्रों एवं शिक्षकों की रचनात्मकता तथा बौद्धिक क्षमता को सशक्त रूप से प्रतिबिम्बित करती है।

खेल-जगत, सामान्य ज्ञान, इतिहास, भारतीय ज्ञान परंपरा, इंजीनियरिंग, प्रबंधन तथा वास्तुकला जैसे अन्य विविध क्षेत्रों के विशिष्ट व्यक्तित्वों पर केंद्रित विषयवस्तु इस पत्रिका को और भी समृद्ध और बहुआयामी बनाती है। SU मेधा में हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में प्रकाशित विषयवस्तु हमारी सांस्कृतिक मूल्यों के सम्मान के साथ-साथ वर्तमान वैश्विक दृष्टिकोण के प्रति सजग रहते हुये उनके संगत ज्ञान को अपनाने की हमारी प्रतिबद्धता को भी दर्शाते हैं।

मैं SU मेधा के इस प्रथम अंक के प्रकाशन में अपना अप्रतिम योगदान देने वाले संपादकीय मंडल, लेखकों, छात्रों और सभी सहयोगियों को हार्दिक बधाई देता हूँ। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सुशान्त विश्वविद्यालय की यह पहल विश्वविद्यालय की शैक्षणिक, बौद्धिक एवं सांस्कृतिक उपलब्धियों की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम बनेगी।

जय शंकर मिश्र
आई.ए.एस. (से.नि.)
कुलाधिपति
सुशांत विश्वविद्यालय

माननीय कुलपति का संदेश

SUमेधा के प्रथम अर्धवार्षिक अंक (जुलाई-दिसंबर 2025) के प्रकाशन पर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। यह पत्रिका सुषांत विश्वविद्यालय की शैक्षणिक यात्रा में एक महत्वपूर्ण कदम है, जो हमारे विश्वविद्यालय समुदाय की विविध प्रतिभाओं, उपलब्धियों और विचारों को एक साझा मंच प्रदान करती है।



ज्ञान, सृजनात्मकता और परंपरा के समन्वय के उद्देश्य से रूपायित SUमेधा में हिंदी और अंग्रेज़ी में प्रस्तुत विषयवस्तु हमारे इस विश्वास को दर्शाती है कि ज्ञान का विस्तार तभी सार्थक होता है जब वह समावेशी और सुलभ हो। इस अंक में प्रस्तुत सामग्री सुषांत विश्वविद्यालय के जीवंत अकादमिक एवं सांस्कृतिक परिवेश को प्रतिबिंबित करते हैं।

मैं संपादकीय मंडल, सभी लेखकों, विद्यार्थियों एवं सहयोगियों को इस प्रथम अंक को साकार करने के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ। मुझे विश्वास है कि SUमेधा आने वाले समय में हमारे संस्थान की प्रगति, मूल्यों और आकांक्षाओं का एक महत्वपूर्ण दस्तावेज बनेगी।

सदैव शुभकामनाओं सहित,

प्रो. राकेश रंजन
कुलपति
सुषांत विश्वविद्यालय

प्रति कुलपति एवं कुलसचिव का संदेश



सुषांत विश्वविद्यालय की प्रथम अर्धवार्षिक, ई-पत्रिका SUमेधा (जुलाई-दिसंबर 2025) के प्रकाशन पर मुझे अत्यंत प्रसन्नता है। यह पहल हमारे विश्वविद्यालय केशैक्षणिक, सांस्कृतिक और सह-पाठ्यजीवन को एकसशक्त मंच प्रदान करती है। SUमेधा में खेल-कूद, इतिहास, भारतीय ज्ञान परंपरा, विद्यार्थियों की उपलब्धियाँ तथा इंजीनियरिंग, प्रबंधन, वास्तुकला जैसे विभिन्न क्षेत्रों के विशिष्ट व्यक्तित्वों पर केंद्रित सामग्री सम्मिलित है। यह सभी अनुभाग मिलकर विश्वविद्यालय की बहुविषयक और समग्र शिक्षा की सोचको दर्शाते हैं।

इस पत्रिका की विषयवस्तु हिंदी और अंग्रेज़ी—दोनों भाषाओं में है जो कि अत्यंत सराहनीय है। यह न केवल अधिक व्यापक सहभागिता को संभव बनाता है, बल्कि हमारी सांस्कृतिक विरासत और आधुनिक दृष्टिकोण के बीच संतुलन भी स्थापित करता है।

मैं इस प्रथम अंक के लिए संपादकीय मंडल, लेखकों, विद्यार्थियों और सभी सहयोगियों को हार्दिक बधाई देता हूँ। मुझे विश्वास है कि SUमेधा आने वाले समय में विश्वविद्यालय के विचारों, उपलब्धियों और रचनात्मक अभिव्यक्तियों का एक महत्वपूर्ण माध्यम बनेगी।

मैं विश्वविद्यालय के सभी शिक्षकों और विद्यार्थियों से आग्रह करता हूँ कि वे भविष्य के अंकों में सक्रिय सहभागिता करें और इस पहल को और समृद्ध बनाएं।

शुभकामनाओं सहित,

डॉ. संजीव कुमार शर्मा
प्रतिकुलपति एवं कुलसचिव
सुषांत विश्वविद्यालय

संपादकीय

प्रिय पाठकों,
मुझे अत्यंत हर्ष और गर्व के साथ यह साझा करते हुए प्रसन्नता हो रही है कि हमारी अर्धवार्षिक ई-पत्रिका “SUमेधा” का प्रथम अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। यह पत्रिका अपने आप में एक विशेषपहल है, जिसमें हिंदी और अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं के माध्यम से ज्ञान, सृजनात्मकता और उपलब्धियों का समन्वय किया गया है।



“SUमेधा” केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि हमारे विश्वविद्यालय के बहुआयामी व्यक्तित्व का प्रतिबिंब है। इसमें DID YOU KNOW जैसे रोचक तथ्यों से लेकर हमारे उर्जावान छात्रों की कविताएँ और लेख भी हैं जो कि इस पत्रिका को और भी जीवंत करते हैं। छात्रों की रचनात्मकता, उनके योगदान और उनकी उपलब्धियाँ इस पत्रिका का हृदय हैं, जो भविष्य की उज्ज्वल की संभावनाओं को दर्शाती हैं। FACULTY ACHIEVEMENTS और FACULTY CONTRIBUTIONS के माध्यम से हमारे शिक्षकों की उत्कृष्टता और रचनात्मकता को भी प्रदर्शित किया गया है। साथ ही, HISTORY और INDIAN KNOWLEDGE SYSTEM (IKS) जैसे विषयों के माध्यम से हमारी समृद्ध विरासत और ज्ञान परंपरा को भी उजागर किया गया है।

इस अंक में विश्वविद्यालय स्तर पर आयोजित कार्यक्रमों, खेल-जगत से संबंधित सूचनाओं, उपलब्धियों तथा विभिन्न क्षेत्रों के दिग्गजों के प्रेरणादायक योगदान को भी समाहित किया गया है। मैं कह सकता हूँ कि, जीवन के हरेक क्षेत्र को समाहित किये हुए SUमेधा एक समग्र प्रस्तुति है।

इस अवसर पर मैं आदरणीय कुलाधिपति, सम्माननीय कुलपति, और श्रधेय प्रतिकुलपति एवं कुलसचिव महोदय के साथ ही साथ अपने विश्वविद्यालय के सभी शिक्षकों, विद्यार्थियों और सहयोगियों का हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके सहयोग से यह प्रयास संभव हो पाया है। आशा है कि सुधी पाठकों को “SUमेधा” का यह प्रथम अंक ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायक और रुचिकर लगेगा।

आपके सुझाव और प्रतिक्रियाएँ हमारे लिए सदैव मार्गदर्शक रहेंगी।

सादर,
डॉ. जगत नारायण गिरि
संपादक
“SUमेधा”

CONTENTS

1-10	Faculty Contribution
11-25	Student Contribution
26-40	Faculty Achievements
41-44	Student Achievements
45-47	Global Footprints
48-52	Campus Chronicles
53-59	School Magazine Section
60-63	Did You Know ?
64-76	From History
77-83	Indian Knowledge System
84-86	Science and Technology
87-92	Sports
93-100	Inspirations and Icons

Note: The contents listed in the index contain clickable links for quick navigation.

Disclaimer: The views expressed in this magazine are those of the contributors and do not necessarily represent the institution. Reproduction of any content without prior permission is prohibited.

माननीय कुलाधिपति
की कलम से

क्या गीत लिखूँ

क्या गीत लिखूँ, क्या छंद रचूँ
जो तन-मन में जीवन भर दे।
रग-रग में व्याप्त वेदना की
प्रतिध्वनि प्रियवर मुखरित कर दे॥

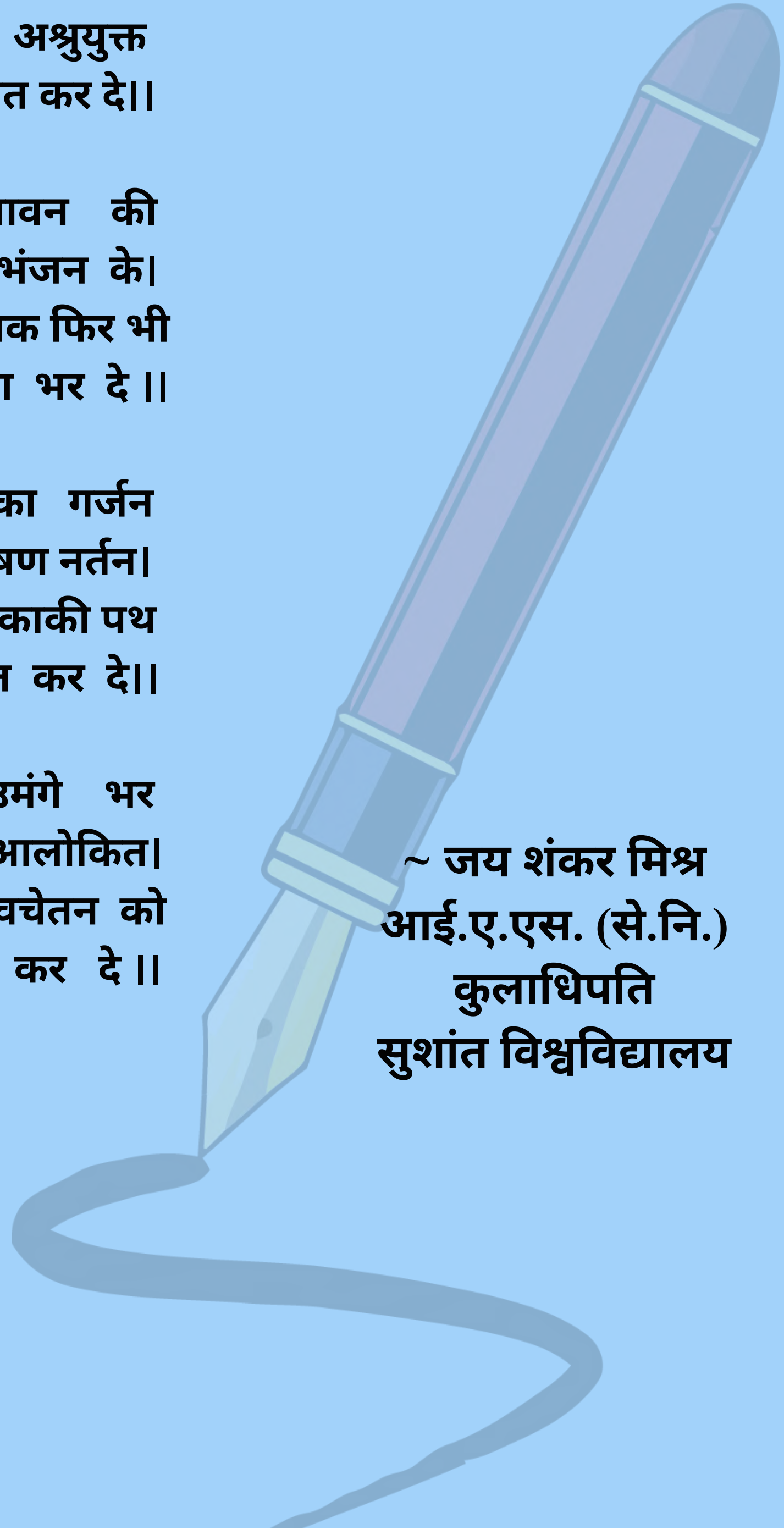
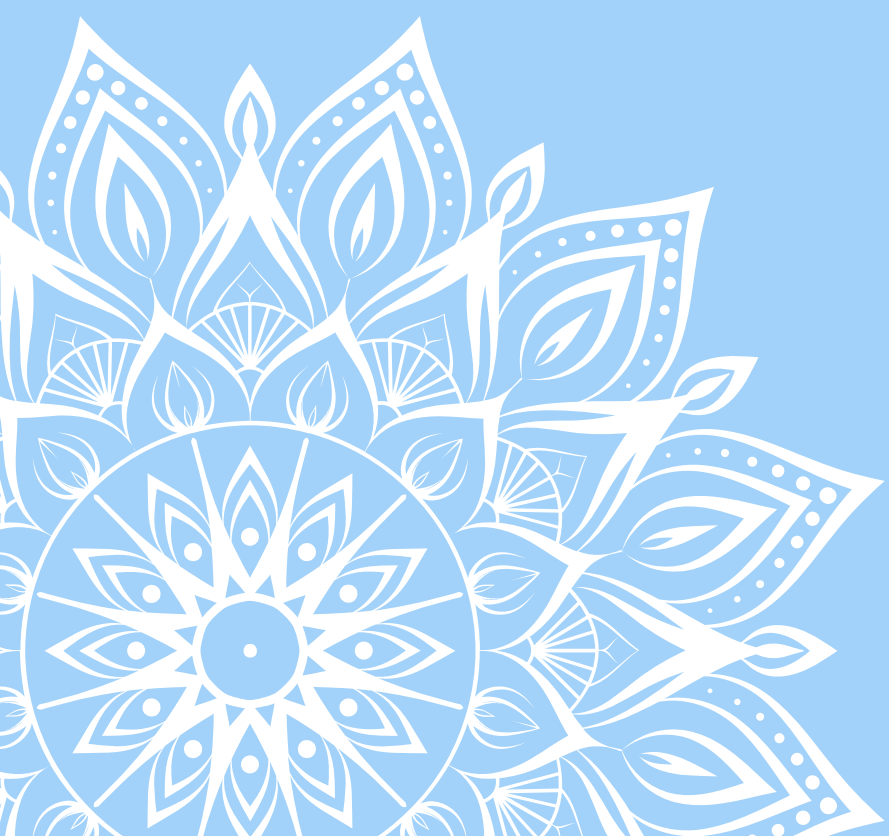
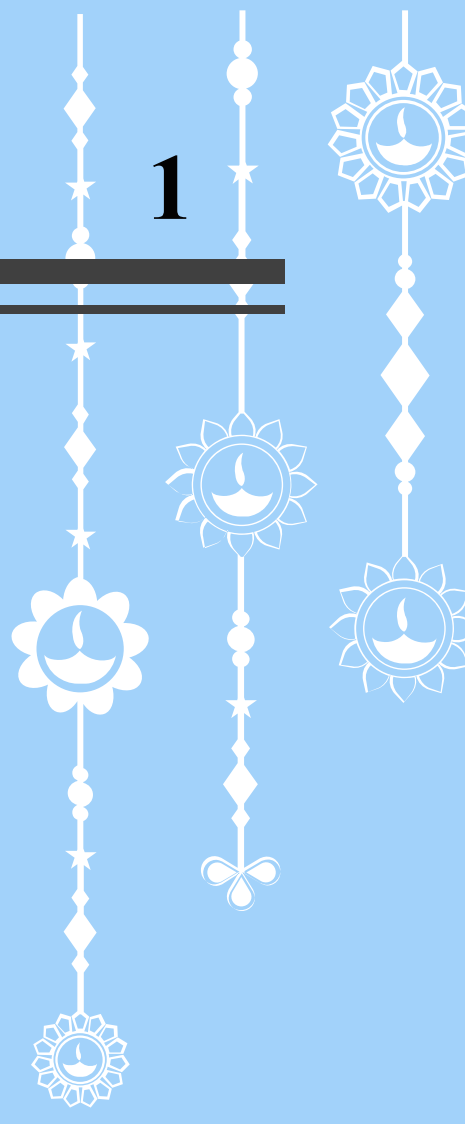
शब्दों में उपालंभ जग के
अक्षर-अक्षर संताप-कसक।
पंक्तियाँ-पंक्तियाँ अश्रुयुक्त
मानस का स्वर गुंजित कर दे॥

घनघोर घटाएँ सावन की
नभ में आसार प्रभंजन के।
तड़िता की चमक-दमक फिर भी
तन-मन में प्रणय-राग भर दे ॥

सागर में लहरों का गर्जन
तट पर चढ़-चढ़ भीषण नर्तन।
तड़ितामय नभ, एकाकी पथ
जीवन-वीणा झंकृत कर दे॥

मन में उत्साह उमंगे भर
पग-पग जीवन कर आलोकित।
क्षण-क्षण चेतन-अवचेतन को
वासंती आह्लादित कर दे ॥

~ जय शंकर मिश्र
आई.ए.एस. (से.नि.)
कुलाधिपति
सुशांत विश्वविद्यालय





FACULTY



CONTRIBUTION



भविष्य के शिल्पकारों को एक संदेश

मेरे प्यारे छात्रों सुनो यह वाणी,
तुम ही हो शिल्पी, तुम ही कहानी।
कला, वास्तु कला, योजना का सार,
तुम्हारे हाथों में सपनों का संसार।

ये ईंट, पत्थर, रंग, और रेखाएं,
सिर्फ सामान नहीं, जीवन की आहें।
इनमें बसाओगे तुम अपनी जान,
तभी तो बनेगा, यह देश महान।

नक्शे कागज पर, जो आज बनाते हो
कल जमीन पर, उसे साकार तुम करते हो।
हर एक डिजाइन, हर एक योजना
समाज के भविष्य की है एक कामना।

कभी रातें जागकर, जब काम करोगे,
थक कर भी जब तुम, नया रंग भरोगे।
याद रखना उस पल, तुम्हारा यह जुनून
बना रहा है दुनिया को शांति और सुकून।

चुनौतियों आएंगी, रास्ते रुकेंगे।
पर तुम्हारी इच्छाशक्ति के आगे, सब झुकेंगे।
रचनात्मक बनो, सोचो नया,
तुमसे ही तो है, यह दुनिया जवां।

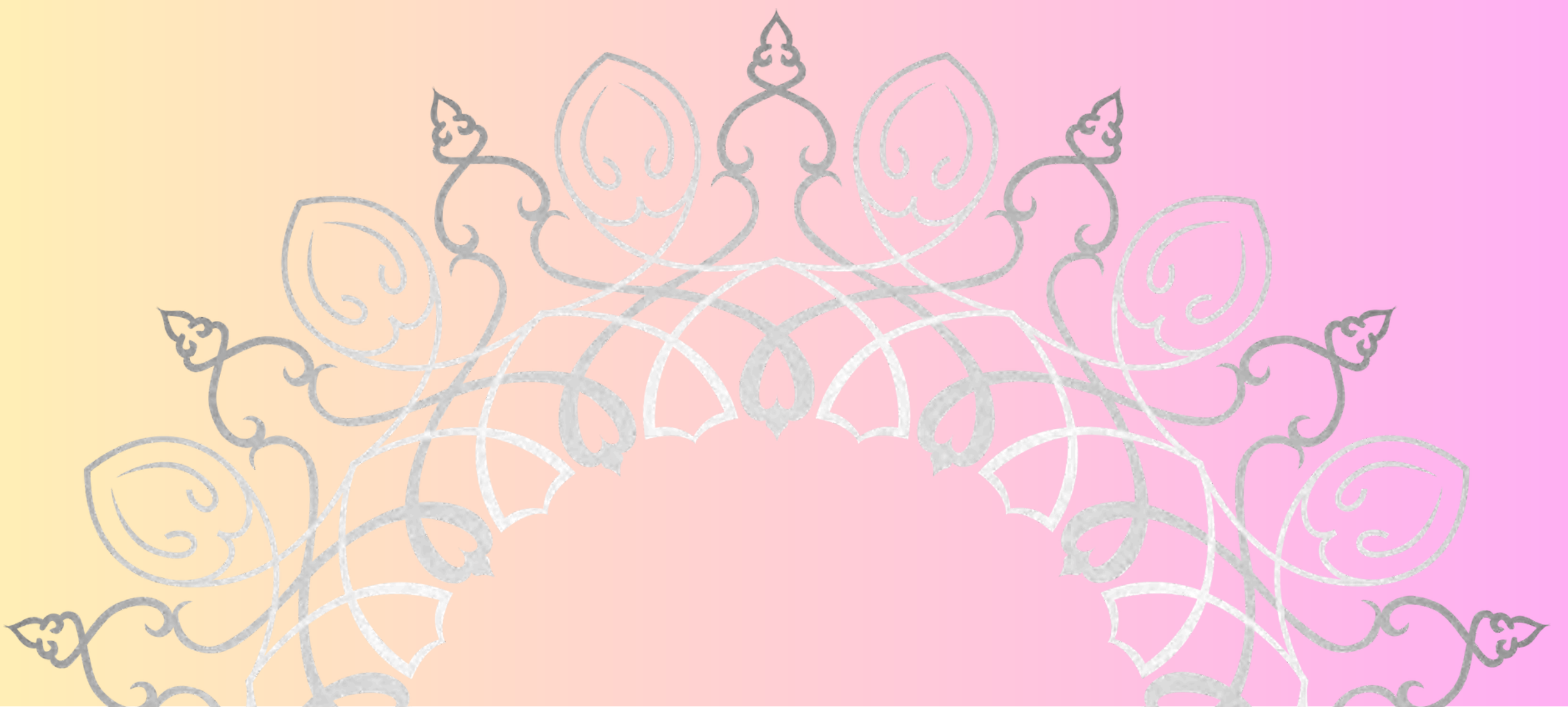
उठो, बढ़ो, और दिखा दो कमाल,
तुम ही हो आज, और तुम ही कल।
ज्ञान की रौशनी से, पथ रोशन करो,
अपने हुनर से जगमग यह जहाँ करो।

अपने पंखों को दो नई उड़ान,
आसमान कि उचाईयों को छू जाओ।
तुम पर है भरोसा, तुम पर है नाज़,
देश का भविष्य तुम्हारे ही हाथ।

स्मरणीय:

मेहनत रंग लाती है: परिश्रम से कभी पीछे मत हटना
विश्वास बनाये रखना: खुद पर और अपनी क्षमताओं पर हमेशा भरोसा करो
ज्ञान कि प्यास: सीखते रहने की इच्छा कभी खत्म न होने देना
सफलता मिलेगी जरूर: बस अपने लक्ष्य पर अडिग रहना

- प्रो विरेंद्रे कुमार मलिक,
स्कूल ऑफ़ आर्ट एंड आर्किटेक्चर



चलो आज लड़ें

चलो आज लड़ें हम सब 'मै' से
 खुद को निकालें तू, तू, मै, मै से
 चलो आज लड़ें हम वहम से
 निकाल फेंके इसको जहन से
 चलो आज लड़ें हम अहम से
 निकाल फेंके 'अ' को अहम से
 चलो निकलें आज हम गम से
 करें इलाज खुशियों के मरहम से
 करलें आज़ाद खुद को खुदी से
 निकलें अब हम सब बेखुदी से
 करें झंडा ऊंचा अपने सुकर्म से
 न झुके कभी अपना शीर्ष शर्म से
 आओ निखारें स्वयं को जप तप से
 निखरें हम सब परिश्रम के तप से।

~ प्रो० (डॉ) जगत नारायण गिरि
 स्कूल ऑफ बिज़नेस
 छात्र अधिष्ठाता
 सुशांत विश्वविद्यालय

Power of Words

Words are but breaths, yet shape the destiny of men,
Soft as the dawn or sharp as midnight's blade;
They heal deep wounds no eyes have ever seen,
Or ignite a fire where peaceful hearts once stayed.

A whispered truth can light the darkest soul,
While careless deceits may drown the bravest will;
In letters small lie powers we cannot control,
To raise the deprived or the strong to tranquil.

With affectionate words, we build both hope and trust,
With bitter tongues, we scatter seeds of pain;
From the ash of grief, kind verses bloom to dust,
And feed the roots of joy with gentle rain.

Remember, if your words cannot heal,
Prefer to keep your lips seal.
So choose each word as if it were a spark—
For one may birth the light or start the dark.

~ **Dr Sagarika Goswami (HC)**
Assistant Professor
Sushant University



You've
Got the
Power

3i Atlas: An Interstellar Visitor and the Quest for True Freedom

19th December 2025, was one of the most significant dates in the history of human civilisation, not only because of its astronomical significance, but also because it carried with it a hallmark symbol of one of the most cherished states of human existence, the symbol of Liberty.

On the 19th, the interstellar visitor to our solar system, the 3i Atlas reached the closest approach to Earth before moving on to its ultimate exit passage to the Planet Jupiter and exit the solar system towards an unknown destination.

The interstellar comet 3i Atlas is only the 3rd interstellar comet ever observed by humans. Hence it has been of the greatest interest and subject of debate across all nations.

Since 3i atlas was never clearly observed by any earthbound instruments, because it's the fastest moving space object ever discovered.

Because of its obscure nature, many hypothesis were generated by curious experts and novices of astronomy about the nature of this mysterious object. In this dialogue we will explore the various ideas that people have proposed regarding the nature and purpose of this mysterious space traveller. This dialogue is presented here in the form of a Knock knock joke..hope you enjoy it.

Stranger at the Door: Knock knock

Scientist: Who's there?

Stranger at the Door: 3i Atlas

Scientist: 3i Atlas Who

Stranger at the Door: 3i Atlas, an interstellar rock spreading the message of Liberty.

The scientist opened the door a little to peer out at the visitor...

Scientist: No, you are not, you are an interstellar comet.

Stranger at the Door: Technically, I am a comet, but metaphorically I represent Liberty.

Scientist: Liberty? How's that?

Stranger at the Door: You see, Liberty means to be free from any external control, and I am free because I am not controlled by the Gravity of the Sun, unlike all the planets and asteroids of the solar system.

Scientist: But Liberty is not about freedom from external control, that is negative freedom. Liberty is more to do with positive freedom, which is about having the resources to build and expand your own potential and fulfill your dreams.

Stranger at the Door: (thoughtfully); Well, you are right, I may be free because I am not controlled by external gravity of Sun, but I am not free as I don't have the resources to go anywhere I want i can only move in a straight line. I am not free even though I appear to be free.

Scientist: Yes, freedom is not about lack of control, it is about being the master of your own financial and informational resources, to expand your own potential and fulfill your dreams.

Stranger at the Door: So, I can never be free?

Scientist: You can be if you can transform your one directional tail into multidirectional vapourised Jet propellers.

Stranger at the Door: A multidirectional Jet...? Then I will not remain a comet, I will become... a spaceship...

Scientist: Forget the Identity that humans have given you. Choose to be who you want to be to become truly free. So, let's start again.

Stranger at the Door: Knock Knock

Scientist: Who's there?

Stranger at the Door: 3i Atlas

Scientist: 3i atlas who?

Stranger at the Door: 3i Atlas, an interstellar alien spaceship spreading the message of Liberty and True Freedom.

Scientist (opens the door): Welcome home old friend

~ **Dr. Sachin Dutt**
Associate Professor
School of Design
Sushant University

Spanish - the Smartest Foreign Language Indian Students Can Learn



India's university students stand at a unique inflection point. They are entering a world that rewards the ability to interact with multiple cultures and build relationships across geographies. While English remains the dominant language of global business, Spanish offers Indian graduates a competitive and practical edge. Spanish and Hindi are the most spoken languages, after English and Chinese, in the world with approximately 550-600 million people using it as their first language. Since Hindi is limited mostly to North India, it makes sense to learn Spanish if you want to think global, as it is spoken across the Latin America, USA, and of course Spain. Therefore, it gives access to one of the largest economic and cultural blocs on the planet.

For Indian business students and professionals, Latin America represents a frontier of enormous opportunity. Countries like Brazil's neighbours — Mexico, Colombia, Chile, Argentina, and Peru — are among the fastest-growing emerging markets in the world. Indian companies in IT, pharmaceuticals, manufacturing, and infrastructure are increasingly expanding into these regions. A graduate who can negotiate, present, and build relationships in Spanish is not just a better communicator — they are a more valuable strategic asset. Spanish proficiency signals cultural respect, and in Latin American business culture, personal relationships precede professional transactions. The ability to engage in someone's language is often the difference between a deal made and a deal lost.

Spain and Latin America have rich traditions in literature, philosophy, economics, law, and the social sciences. Spanish gives Indian students direct access to a vast body of academic work that is either untranslated or loses nuance in translation. Researchers will find that some of the most compelling and relevant scholarship comes from Spanish-speaking scholars writing in their own language. University exchange programs with institutions in Spain, and Spanish speaking countries are growing, and Spanish proficiency dramatically expands the range of institutions available to Indian students for semesters abroad.

Learning any foreign language strengthens cognitive flexibility, memory, and problem-solving ability. Spanish is particularly well-suited for Indian learners because its phonetic structure. The words are pronounced largely as they are spelled which makes it more accessible than many other European languages. Beyond cognition, language learning builds empathy. When you struggle to express yourself in another tongue, you develop patience and appreciation for others, a quality that makes better managers, collaborators, and leaders.

In an era where diversity, cultural intelligence, and global mindset are no longer soft skills but core professional requirements, Spanish-speaking Indian graduates bring something genuinely distinctive to any organization operating at international scale. The world speaks many languages. The students who choose to meet it halfway will always have the advantage.

~ Dr. Paramjit S. Lamba
(Asst. Professor)
School of Business
Sushant University

STUDENT CONTRIBUTION



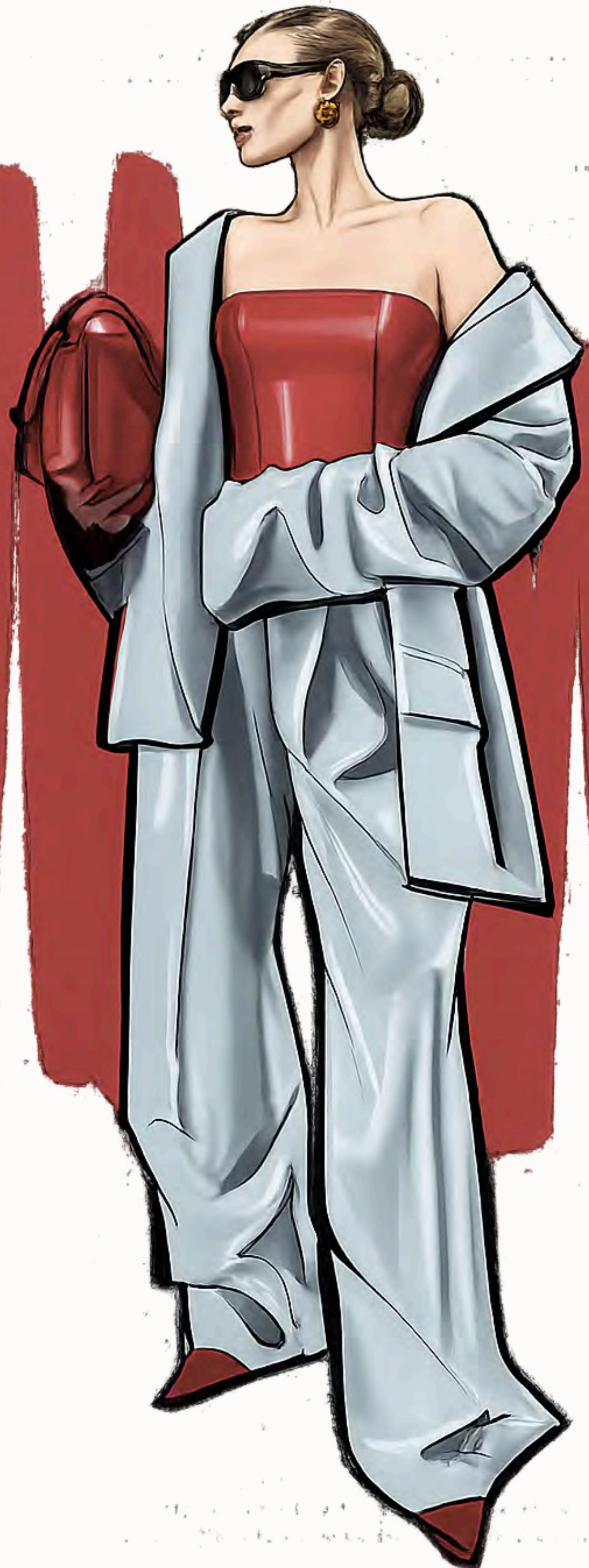
**CURATED EXPRESSIONS FROM
EMERGING MINDS**

FASHION

For me, fashion is a way to express creativity and personality. What I like about this look is the balance between bold color and relaxed styling. The red shade adds energy to the outfit, while the oversized suit gives it a modern and confident feel. This style shows how fashion can combine comfort with elegance. I believe that fashion is not only about following trends but also about experimenting with different styles and finding what feels authentic.

As someone who enjoys fashion, I find looks like this inspiring because they show how simple elements can come together to create a strong and stylish appearance.

~ SAKSHI AGGARWAL
250BCOM010
1ST YEAR, BCOM
SCHOOL OF BUSINESS



"FASHION IS A FORM OF SELF-EXPRESSION THAT REFLECTS PERSONALITY AND CONFIDENCE."

WHAT IS FASHION ACCORDING TO YOU ?



This look reflects a creative and modern interpretation of fashion. The soft blue tones combined with unique accessories create a style that feels both elegant and artistic. The sunglasses and structured outfit add a confident and contemporary touch.

What makes this style interesting is how it blends simplicity with creativity. Small details, like the floral element and textured accessory, make the outfit stand out while still keeping the overall look balanced and refined.

For me, fashion is also about experimenting with different styles and discovering new ways to express creativity through clothing

~ SAKSHI AGGARWAL
250BCOM010
1ST YEAR, BCOM
SCHOOL OF BUSINESS

" STYLE IS A REFLECTION OF CREATIVITY AND CONFIDENCE "



" ALLURE "

The Introverts Tales – Why People Change: The Power Behind Transformation

Change is a big part of life. It's not just about doing things differently; it's about growing, feeling, and becoming a better version of yourself. Life pushes us to change in many ways—sometimes through pain, new ideas, too much of something, or seeing something amazing



Change does not happen suddenly. It builds slowly inside us, shaped by emotions and experiences that leave a deep impact.

The experience of being overlooked affects people differently, especially when we look at the contrast between extroverts and introverts. While an extrovert might move on easily from someone's indifference—supported by a wide social circle and constant new connections—an introvert carries the weight of that same indifference long after the moment has passed.

It's important to understand that an introvert is not simply a shy person.

Shyness comes from fear of speaking, fear of new people, or fear of judgment.

Introversion, however, is a preference for the quiet richness of solitude.

Introverts feel peaceful when alone, drained in large crowds, and recharged through silence and reflection. They don't fear communication; they simply choose to invest their social energy in a small, carefully selected circle of people.

For an introvert, these few connections mean everything. When they care for someone, it is not casual. It is deep, loyal, and consistent. They show love through small details—checking in, remembering routines, listening carefully, and valuing your thoughts. Their quiet nature often hides the depth of their emotions.

But this deep care also brings deep vulnerability. An introvert's greatest pain comes from those closest to them making them feel unimportant, ignored, or left out. They may not express this hurt openly. Instead, they absorb it silently and feel it completely. Over time, that silent pain becomes a turning point. People don't change without reason. They change when the pain of staying the same becomes greater than the fear of letting go. Sometimes people change when the pain becomes too much to carry. After giving too much, loving without equal return, and hoping in silence for improvement, they realize they must protect themselves. This change is not loud.

It is quiet. They pull back, become more careful, and stop explaining their heart to people who never tried to understand it. It is not about becoming cold—it is about becoming wise. Sometimes change comes from learning something new. A realization, a conversation, or a moment of clarity can shift everything. Once you see that you deserve better, you cannot unsee it. You grow because you now have more awareness and strength. Sometimes change happens when you receive more than you are used to. Genuine love, respect, and kindness can reset your standards. You begin to understand your worth and stop accepting less—from others and from yourself.

And sometimes change is inspired by seeing something better. Witnessing someone's peace, confidence, or purpose can awaken a desire within you. You don't want their life—you want the feeling it carries. That vision pushes you to grow toward your potential.

In the end, change is a meaningful response to life's experiences. For an introvert who has loved deeply and hurt silently, change is a necessary evolution.

It is the journey from quiet suffering to quiet strength. It is choosing to value yourself just as deeply as you value others.

So, if you know an introvert, remember the weight of their silence. They may not shout their love, but they build a home for you in their quiet heart. And if that home is left empty for too long, do not be surprised when they quietly lock the door—not out of anger, but out of growth.

“Sometimes the quietest hearts make the strongest transformations—because when they finally change, they change for good.”

NAVEEN SINGH RAWAT

250BCA019

1ST YEAR, BCA

SCHOOL OF ENGINEERING AND TECHNOLOGY

SUSHANT UNIVERSITY

तो एक शाम आऊंगा तुम्हारे घर पे!



तो एक शाम आऊंगा तुम्हारे घर पे!
 एक हाथ में एक गुलदस्ता लेकर!
 तुम्हें कहूँगा कि चलो मेरे साथ!
 रात को तन्हा बैठेंगे!
 कुछ बातें करेंगे!
 कुछ शायरी सुनूँगा!
 और मैं सारी रात तुमको ऐसे ही देखता रहूँगा!
 और चाँद चिल्लाता रहेगा!
 मैं चाँद हूँ..
 मैं चाँद हूँ..
 मैं चाँद हूँ..
 और फिर भी मैं तुझको ही
 देखता रहूँगा..
 देखता रहूँगा देखता रहूँगा...

SUDHANDHU DIXIT
BBA 2025

Your Grandparent's Home

Whenever I feel restless and tired
And know that I need peace and quiet
I think about a place
Where I can get my own space
It is beautiful and sweet
Filled with old memories and treats
The spiritual atmosphere present there
Enlightens me with Heartfulness and flare
A heavenly place which is my grandparents home
A place where everyone is together and no one alone
I feel warm and comfortable
Whenever I think about the delightful dinner table
Ecstasy glares on my face
Whenever I think about that wonderful place
Looking back at the past
I realized the time went by so fast
I still think about the old days when I used to be a child
Playing all day and being wild
Nothing more I'd like than to stay with them forever
I may just have everyone's lost treasure

*By Manan Dutt
BCOM 2025*

EVOLUTION OF KATHAK

Kathak, one of India's eight classical dance forms, has undergone a remarkable journey of transformation while preserving its rich traditional roots. Originating from the word *katha*, meaning "story," Kathak began as a narrative art form practiced by wandering storytellers who conveyed mythological tales through rhythmic footwork, expressive gestures, and subtle facial expressions. Over centuries, this dance form evolved through royal patronage, cultural exchanges, and changing social contexts, shaping Kathak into the refined, dynamic, and emotionally evocative art that we recognize today.

During the Mughal era, Kathak absorbed Persian aesthetics, which introduced intricate footwork, elaborate spins (*chakkars*), graceful arm movements, and a sophisticated musical structure. This period gave rise to distinct *gharanas*, or schools of style, the most prominent being the Jaipur and Lucknow *gharanas*. The Jaipur *gharana* emphasizes powerful footwork, complex rhythmic patterns, and energetic movements, while the Lucknow *gharana* is known for its delicate expressions, lyrical grace, and refined storytelling. Together, these styles highlight the depth, versatility, and artistic richness of Kathak.

In contemporary times, Kathak has continued to evolve, embracing innovation without losing its classical essence. One of the most significant developments in recent decades has been the growing trend of fusion, particularly with Bollywood and even Hollywood influences. This fusion has opened new creative avenues, allowing Kathak to connect with wider audiences, especially the younger generation. Bollywood, with its global reach and mass appeal, has played a crucial role in bringing Kathak to mainstream platforms, blending classical techniques with modern music, cinematic choreography, and contemporary narratives. The fusion of Kathak with Bollywood and Western styles has not diluted its authenticity; instead, it has redefined the way classical dance is perceived. Dancers now experiment with varied musical genres, storytelling formats, and stage presentations, creating performances that resonate across cultural boundaries.

Hollywood's influence, especially through global dance styles and theatrical staging, has further encouraged Kathak artists to explore cross-cultural collaborations, making the dance form more inclusive and globally relevant.

As a performer, I actively engage with this evolving landscape by blending classical Kathak with contemporary music, particularly Bollywood songs. I specialize in performing both Jaipur and Lucknow gharana Kathak, allowing me to seamlessly integrate strong rhythmic patterns with expressive storytelling. This fusion approach helps preserve the classical foundation while presenting it in a modern, relatable context. My recent performance on the song Naal Nachna from the movie Dhurandar exemplifies this synthesis, where traditional Kathak movements were choreographed to contemporary rhythms, creating a visually engaging and emotionally impactful presentation.

Through such performances, I aim to showcase how classical dance can adapt to modern sensibilities without compromising its soul. Fusion becomes not merely a stylistic experiment but a powerful medium to bridge generations, cultures, and artistic traditions. In doing so, Kathak continues to thrive, evolve, and inspire, reaffirming its relevance in a rapidly changing world.

Ultimately, the journey of Kathak—from temple courtyards and royal courts to global stages and cinematic platforms—reflects its timeless adaptability. By embracing innovation while honoring tradition, Kathak stands today as a living, breathing art form, capable of storytelling that transcends boundaries and connects hearts across cultures.

Aashmeen Kaur
B.Arch 1st year
250BARCH009

75% Ka Chakravyuh

Suno ai doston, ek dard-e-dil sunate hein, Attendance ke chakkar mein jo roztil-til jalate hain. Wo baacho ke sota hua chehra , teachers ki daatein, 75 percent ki talwaarein, aur humare adhure khwaaob ki baatein.

Roz subah ek naya bahana taiyaar hota hai, Kyunki bistar se uthna kisi jung se kam nahi hota hai. Ma'am ko bola, "Aaj metro ka tyre puncture tha, " Unka puchna, "Beta, kya dimaag ka dahi culture tha? " Kabhi lift kharab, toh kabhi raste mein jaam tha?

Asal mein toh neend पूरी karna hi mera kaam tha.

"Sir, raste mein ek bacha kho gaya tha, usse ghar chhoda," Sir bole, "Pichle saal bhi yahi bacha tha, thoda toh dimaag dauda! "

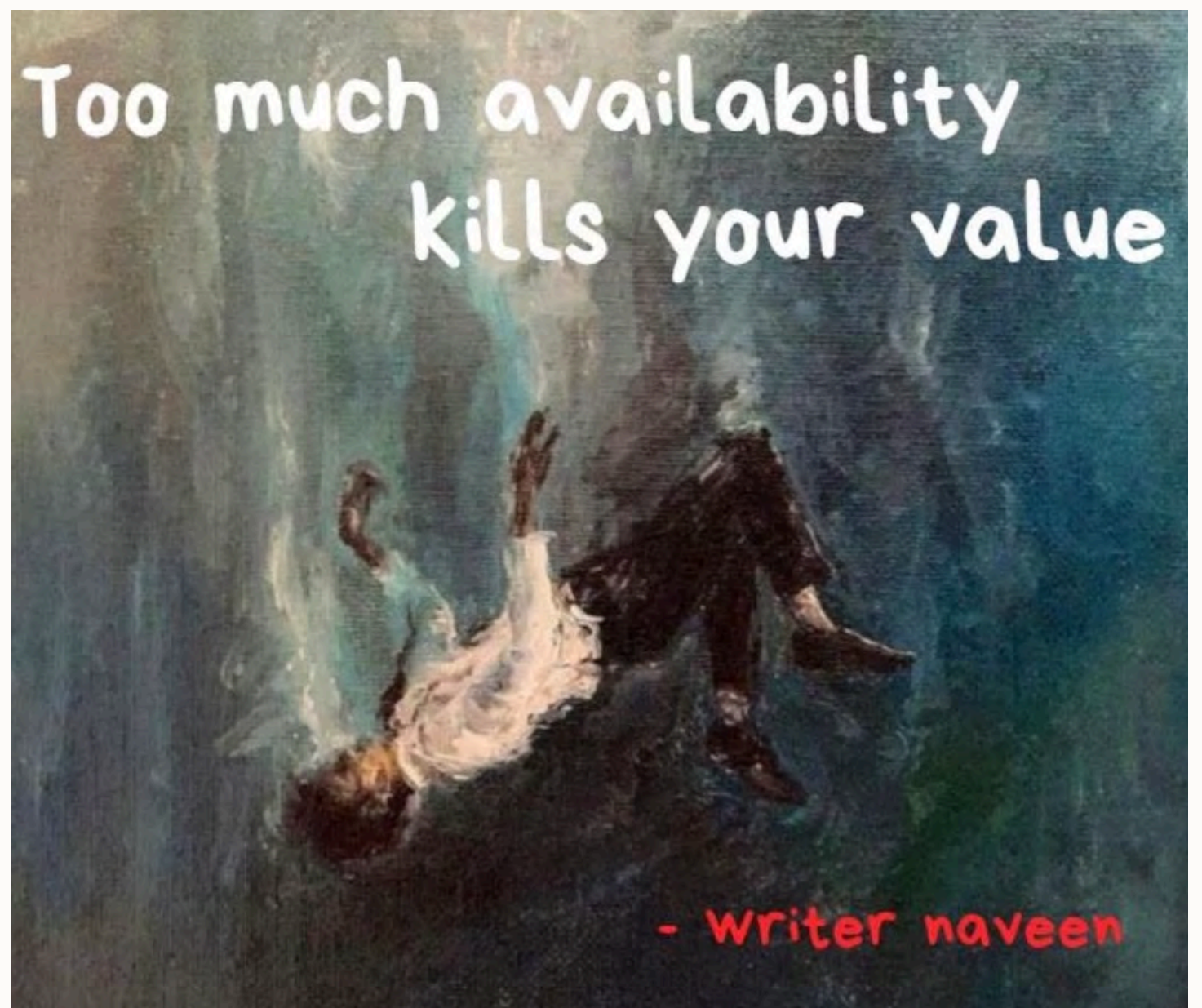
Baarish hui toh 'flu' ka bahaana fit baithta hai, Dhoop nikli toh 'dehydration' ka kissa hit baithta hai. Dadi ki tabiyat har semester mein bigadti hai, Attendance ki shortage dekh kar meri kismat akadti hai. Magar doston, ye mazaak ek din bhari padega, Jab Admit Card ke liye 'Debarred' ka thappa ladega. Baithoge bahar jab sab exam likh rahe honge,

Aur tum canteen mein samosa kha kar dukh dikh rahe honge. Isliye chhodo ye bahaane, thoda lg jao college bhi ane, Baad mein rone ya bolne se achha, pohuchjao thodi bohoot proxy hi lagwane! (Just kidding, proxy mat lagana, seedhe class mein hi jaana!)

*By:- Ayan Himanshi Sehwat
Harsh kumar and Vivek Jindal*

Too much availability kills your value

In today's world, people often exist in each other's lives without truly knowing one another. Conversations happen daily, but understanding is rare. Many relationships have become casual, temporary, and convenient—maintained as long as they are easy and abandoned when they demand effort. In such a reality, loyalty and emotional depth can sometimes feel uncommon.



Yet, there are still individuals who believe in standing by their loved ones—not only in moments of celebration, but also in moments of struggle. **I consider myself one of them.**

It has always been my nature to stand beside others during challenges, responsibilities, and difficult phases. I make myself available whenever someone needs help because I understand what it feels like to face hardships alone. **Loneliness during tough times leaves a lasting impact,** and perhaps that experience shaped my instinct to ensure that no one close to me feels unsupported.

Since childhood, I have rarely had a large circle of close friends. I connected deeply with only a few people. Many interactions remained surface-level, and some individuals turned out to be inconsistent or insincere. At times, I was made to feel inadequate or less important. This led me to question myself—was I too kind, too forgiving, or simply too available?

In my effort to maintain harmony, I often prioritized others' emotions over my own. I avoided conflicts, accepted misunderstandings, and occasionally took blame just to preserve relationships. **While I was consistently present for others, I slowly realized that the same consistency was not always returned.**

During my school years, I had only one or two genuine friends. Even after school, only a small number of true connections remained. I valued them deeply and was always ready to support them in any situation. However, there were moments when I felt alone in my own struggles. While others had multiple circles to turn to, my emotional world revolved around very few individuals.

Over time, I understood something significant:

When you are always available without boundaries, your presence becomes assumed rather than appreciated.

If you never say no, your time loses importance.

If you forgive without limits, accountability weakens.

If you consistently place others before yourself, **your own needs begin to disappear.**

This realisation did not change my belief in kindness or loyalty. Instead, it refined it. **Being supportive does not require self-neglect.** Caring for others does not mean compromising your self-respect. True relationships are built on mutual effort, not one-sided endurance.

The most important lesson I have learned is simple yet powerful:

Be kind, but protect your worth.

Be supportive, but establish boundaries.

Love deeply, but never at the cost of your dignity.

Because in the long journey of life, **your value is not defined by how available you are to others, but by how strongly you respect yourself.**

NAVEEN SINGH RAWAT

250BCA019

1ST YEAR, BCA

SCHOOL OF ENGINEERING AND TECHNOLOGY

I DIDN'T GO TO VIETNAM!

That sentence still feels strange to say, especially because for months it was the plan. The trip was supposed to be our big adventure — passports, group photos at airports, chaotic packing, and all the late-night conversations in a country none of us had seen before. But life doesn't always move according to Google Calendar. A family event came up, one of those moments that quietly rearranges priorities. And so I stayed back. The airport pictures started coming in before sunrise sleepy faces, oversized hoodies, someone already panicking about luggage weight. I wasn't in the frame, but I was in the group chat, reacting in real time. When they sent a video of the plane lifting off, it didn't feel dramatic. It just felt... real. The trip had begun. And so had something else for me. While they were navigating boarding gates, I was helping set up chairs at home, arranging plates, listening to relatives greet each other after months. The house felt fuller than usual — conversations overlapping, the kitchen constantly busy, the doorbell ringing every few minutes. It wasn't the buzz of an airport, but it had its own rhythm. Through the day, my phone would light up with glimpses of Vietnam narrow streets glowing under warm lights, endless lines of scooters, bowls of food that looked almost too perfect to touch. One friend kept sending short voice notes: quick reactions, laughter in the background, spontaneous commentary about architecture and tiny cafés tucked into corners.

They described how the buildings blended old and new — colonial façades next to contemporary storefronts, textured walls, layered balconies. I found myself imagining the spatial proportions, the materials, the light. It was like sketching in my head. I wasn't physically there, but their descriptions were detailed enough to build scenes in my mind.

At home, things unfolded differently but just as meaningfully. I sat with relatives I rarely get uninterrupted time with. I listened to stories from years before I was born. I helped in the kitchen, stole bites before dishes made it to the table, laughed at the same family jokes that somehow never get old. There's a comfort in being surrounded by people who have known you your entire life no introductions, no explanations, just belonging.

In the evenings, when the house quieted down, I'd scroll through the day's updates from Vietnam. Beach videos where the horizon dissolved into soft blue. Group photos in unfamiliar streets. Candid clips of them trying new food, debating flavors, negotiating spice levels. There were moments when I paused on a picture a little longer. At the same time, being present at home stretched me too just in another direction. It reminded me that not every meaningful experience requires a passport stamp. Some are found in shared meals, in sitting on the floor with cousins, in late-night conversations with elders who speak slowly and intentionally. There's depth in staying. When my friends returned, sun-kissed and sleep-deprived, the stories turned animated. Hand gestures, exaggerated reenactments, inside jokes already forming. I listened closely, filling in the spaces between the photos I had seen. It didn't feel like I had missed everything. It felt like I had experienced it differently through their excitement, their perspectives, their words. Maybe one day I'll walk those same streets myself. Maybe I'll see if they match the versions I built in my head. But I don't feel like I was left behind.

They traveled outward. I stayed rooted. And somehow, both journeys mattered.

ZAARA MORIS
240BARCH06

FACULTY ACHIEVEMENTS

Academic Excellence & Contributions



*“Recognizing Excellence in
Teaching, Research & Innovation”*

**PHD AWARDED
DR. POOJA LALIT KUMAR**



With immense pride and joy, we celebrate Dr. Pooja Lalit Kumar on being awarded her PhD from Jamia Millia Islamia, Central University.

Her thesis, “Exploring & Assessing Spatial & Socio-Ecological Resilience of Urban Communities to Disaster Risks: A Case Study of Gurugram” reflects a remarkable journey of learning, introspection, and resilience—echoing the very essence of her research. We applaud her dedication and commitment to advancing knowledge in disaster resilience and urban planning. Congratulations once again on her outstanding milestone!

GLOBAL SPOTLIGHT

SAA SHINES AT 21ST ASIAN CONGRESS OF ARCHITECTS, KOREA.



Sushant University faculty member Ms. Avitesh Vaishnavi Nayak, Assistant Professor at SAA, proudly represented India as an official observer for the ARCASIA Committee on Young Architects at the 21st Asian Congress of Architects held in Incheon, South Korea, from 9–12 September 2025.

As part of the 65-member Indian delegation led by Ar. Tushar Sogani, she engaged with architectural leaders and young professionals from 22 ARCASIA member nations. The congress, themed “A Better Tomorrow.” Focused on sustainability, technological innovation and collaborative design futures.

Ms. Avitesh actively contributed to youth-oriented forums addressing climate-responsive design, digital fabrication, and affordable housing. Her participation brought valuable insights that she aims to integrate into Sushant University's curriculum and research, further strengthening its global outlook.



DR. MEENAKSHI GUPTA EARNS POST-DOCTORAL POSITION AT UNIVERSITY OF SOUTH FLORIDA

Dr. Meenakshi Gupta from the School of Engineering and Technology has been selected as a Post-Doctoral Researcher at the University of South Florida, USA. Her research will focus on machine learning applications in ranking systems.



DR. VANDANA KAUSHIK PARTICIPATES IN INTERNATIONAL CONFERENCE (IC-FITS 2025)

Dr. Vandana Kaushik participated in the International Conference on Future Innovation and Trends in Sciences (IC-FITS 2025) held on 25–26 September 2025 at Sanskaram University, Haryana.

She delivered an oral presentation on her research paper titled: “ZnO/BaTiO₃ Heterojunctions: A Promising Candidate for Optoelectronic Devices.” The conference provided a platform for academic exchange on emerging scientific innovations and research trends, highlighting her contribution to the field of optoelectronic materials.



DR. SUMAN GOYAT PARTICIPATES IN NURTURING FUTURE LEADERSHIP PROGRAM

Dr. Suman Goyat successfully participated in the Nurturing Future Leadership Program (NFLP) held at Shiv Nadar University, under the aegis of the Madan Mohan Malviya Teacher Training Programme (MMMMTTP), sponsored by the Ministry of Education, Government of India. The program focused on experiential learning, contemporary developments in higher education, and leadership practices, enabling her to gain a deeper understanding of effective leadership within the academic ecosystem.



DR. PRIYA A. SONDHI, PROFESSOR AND DEAN, SCHOOL OF LAW

Dr. Priya A. Sondhi was invited for a keynote address on “Plagiarism and Legal” in the International Conference on Recent Advancement in Multidisciplinary Innovation and Research (RAMIR-2025), on 20th December 2025, organized by DPG Degree College, Gurugram. Her book titled “The Code on Industrial Relations 2020”, published by Satyam Law International along with co-authors Anoop Kumar & Shivani Gupta, was inaugurated by the esteemed Former Supreme Court Judge of India, Justice Ajay Rastogi, alongside the Vice Chancellor, Pro-Vice Chancellor, COE, and Dean Research during the Constitution Day celebration.

**DR. SULAKSHANA BANERJEE MUKHERJEE,
ASSOCIATE PROFESSOR OF LAW**



She chaired an International Seminar on “Data Protection in the AI Era: Bridging Gaps between Law, Policy and Technology. ” Co-chairs included Dr. Sheikh Inam Ul Mansoor, Assistant Professor of Law at Symbiosis Law School, Hyderabad, and Prof. Pranjali Bawane, Assistant Professor of Law at Vydehi Institute of Law. The seminar was organized by the Law Mantra Trust in collaboration with the Centre for Innovation and Intellectual Property Rights (CIIPR), Rajiv Gandhi National University of Law, Punjab. Additionally, Dr. Mukherjee’s book titled “Artificial Intelligence: Foundations and Frontiers”, published by Sultan Chand & Sons, was inaugurated by Justice Ajay Rastogi, Former Supreme Court Judge of India. The event also included the Vice Chancellor, Pro-Vice Chancellor, COE, Dean Research, Head HR, Mukul Sir, and the Dean of the School of Law.



**DR. DIVYA SHARMA,
ASSISTANT PROFESSOR OF LAW**

She has authored two scholarly book chapters with national publications. Her work titled “The Role of Space Law in Climate Change and Environmental Protection” was published in *Frontiers of International Law: Space, Climate, and Global Governance* (Book Rivers, 2025). Her second chapter, “The Future of Bail Laws: Reform and Innovation”, appeared in *Bail in India: A Legal and Social Perspective* (Anantjit Publication, 2025). Through these contributions, she continues to engage rigorously with contemporary issues in international law and criminal justice, reinforcing her academic standing and commitment to legal research and scholarship.



DR. ANSHIKA PRAKASH AGGARWAL

The letter of appreciation from Chitkara University acknowledged Dr. Anshika Prakash's valuable role as Session Chair at the Doctoral Consortium 2025. It highlighted how her guidance, feedback, and mentorship enriched doctoral scholars' learning and strengthened future academic collaboration with the university.



DR. GUNJAN A. RANA AND MS. NEHA MISHRA

Dr. Gunjan A. Rana and Ms. Neha Mishra at the AIMA Young Leaders Summit 2025, held on 10th December, engaging with thought leaders and emerging professionals on leadership, innovation, and the future of management education.



DR. JAGAT NARAYAN GIRI

Dr. Jagat Narayan Giri was invited as a special guest to “States’ Policy Conclave 2025” hosted by PHD Chambers of Commerce on 11th December, 2025. The central theme of the conclave was “Navigating Global Challenges with Fast-Tracked Indian Economy.”

DR. GUNJAN A. RANA

- Dr Gunjan A. Rana published Paper in Advances in Consumer Research on “Decoding influencer Influence: A Mixed-Method Study of Content Strategy and Audience Engagement on Instagram” (JGER-D-24-00303R2). In Volume-2, Issue-6 Dec 2025. ABDC (B category journal).
- Dr Gunjan A. Rana also published her paper in Journal of global entrepreneurship research on “Entrepreneurial and leadership orientation towards sustainable growth- a systematic literature review of the initiatives and approach” (JGER-D-24-00303R2). Web Science publisher Springer. Nov 2025.





MS FARHANA MARIYAM

- Ms Farhana Mariyam published a Scopus-indexed research paper titled “A Rough-Set Based Goal-Oriented Methodology for Requirements Analysis in Information System Design” in Journal of Systems and Soft Computing, Vol. 7 (2025).
- Completed a 30-hour Live Training Program on Foundations of Programming with Python (Sep 15–Oct 6, 2025).
- Successfully completed the Generative AI Mastermind course organized by Outskill.



DR. ASHISH KUMAR

- An Analytical Study of Human Resource Management Practices and Faculty Satisfaction in Higher Education Institutions in the National Capital Region (NCR) in Research Journal – Journal of Informatics Education and Research (ABDC Indexed Journal).
- Evaluating the Effectiveness of Human Resource Management Practices on Institutional Performance in Higher Education Institutions: A Study of NCR in Research Journal – European Economic Letters (ABDC Indexed Journal).



DR. NIDHI CHOWDHRY

- Dr Nidhi Chowdhry published a research paper titled “Assessing the Impact of Age and Career Stage on Job Stress Levels of Women in NCR” in Research Journal – Journal of Informatics Education and Research (ABDC Indexed Journal).
- Dr Nidhi Chowdhry also published a research paper titled “Development and Psychometric Validation of the Self-Administered Stress Questionnaire (SASQ) Among NCR Employees” in Research Journal – European Economic Letters (ABDC Indexed Journal).

MS AMBIKA GAUR



She continued to enhance her academic and professional profile through prestigious certifications in Managing Virtual Project Teams and Managing People from The Open University, and Management Leadership from Saylor Academy. She has also earned Technical SEO and AI Search Essentials certifications from Semrush, reflecting a strong blend of leadership skills and AI-enabled digital expertise aligned with contemporary organizational needs.



DR. CHAKSHU MEHTA

- Dr Chakshu Mehta published a paper titled “The Role of Social Media in Enhancing Legal Awareness on Bail Laws in India” in the book “Bail in India: A Legal and Social Perspective.”
- Presented and published a paper titled “Green Social Media Marketing: A Sustainable Tool for the Tourism Industry under the Society 5.0 Framework” at the International Conference on Diversity, Digitalization, Sustainability, and Technology in Hospitality and Tourism (VCON 2025).

We are pleased to announce that Dr. Chakshu Arora from Sushant University's School of Business completed her Ph.D. on September 17, 2025, focusing on ‘Social Media Adoption and Its Impact on Non- Financial Performance of Apparel Store Retailers in NCR.’ This achievement reflects her dedication and hard work. We congratulate her and wish her success in future endeavors.



DR. DEEPTI SEHRAWAT

- Dr Deepti Sehrawat's research paper titled "Driving Organizational Performance through Data-driven Practices" was published in Journal of International Commercial Law and Technology (ABDC Indexed Journal).
- Dr Deepti Sehrawat successfully completed the Innovation Ambassador (Advanced Level) Training conducted by the Ministry of Education's Innovation Cell and AICTE.



DR. RICHA ARORA

1. Dr Richa Arora published two research papers in ABDC Indexed Journals: Journal of African Development and Journal of International Commercial Law and Technology.
2. Dr Richa Arora contributed two book chapters in Scopus Indexed Volumes by Springer Nature (2025) on sustainable development and microfinance.



DR. AANCHAL DANGWAL

- Received a certificate for presenting a paper titled “Sustainability in Business: Lessons from Indian and Russian Corporate Practices” at the 3rd International Conference on Indian & Russian Knowledge System, held at CSJM University, Kanpur, on 13–14 November 2025.
- Successfully completed the “Introduction to Prompt Engineering” professional course certified by Simplilearn SkillUp (November 2025).
- We proudly congratulate Dr. Aanchal Dangwal, Assistant Professor, School of Business, for successfully completing her PhD program in August 2025. Her research on “Prediction of Employee Turnover Using Sentiment Analysis” makes a significant contribution to the field of Human Resource Management and organizational studies.
- Her journey is an inspiration for students and colleagues alike, showcasing the power of perseverance, research, and academic excellence.
- "Research is creating new knowledge. Every milestone is not just an end, but a beginning of greater possibilities."-Neil Armstrong



THE MENTOR – PROF. JS MUKUL

Professor Emeritus J. S. Mukul enhanced Sushant University’s global outreach through high-impact engagements in various sessions:

- Chief Guest at IMI New Delhi MUN 2025 (11–12 Oct) themed “Error 404: World Not Found.”
- MoUs signed with German Academy of Digital Education (14 Oct) for IoT & 5G and Aivancity, France (15 Oct) for AI/Data programmes.
- Addressed IIM Calcutta–SCOPE AGLP 2.0 (24 Oct) on India’s Foreign Policy for senior PSE executives.
- Facilitated Global Immersion Programme (Dubai, 28 Oct–1 Nov) with American University of the Emirates (AUE).
- Hosted Univ. of Exeter, UK lecture on Leadership (29 Oct).
- Met Cattolica Univ., Italy (30 Oct) exploring collaborations in Business, Law, Health & Hospitality.
- PLS Lecture by Namibia High Commissioner H.E. Sinimbo (4 Nov).
- Guest lectures by AUT, NZ (13 Nov) on Climate Change and Univ. of Newcastle, Australia (18 Nov) on Immersive Simulation.
- MoU with Mod’Art International, Paris (21 Nov) for fashion programmes.
- Represented SU at Kent State Univ., Florence (23–24 Nov) and met Maitri Global Education for MoU review.

- Addressed Abhinandan 2025 – Gyan Sagar Awards (28 Nov) on Education Beyond Boundaries. Prof. J. S. Mukul met the Chancellor and delegation from Okayama University, Japan on 5 December 2025 to explore academic collaboration and engaged with representatives of key Japanese organizations.



- The Centre for International Relations facilitated IDP Education’s Virtual USA University Meet on 13 December 2025, enabling SU students to explore study opportunities with ten leading US universities.
- Prof. J. S. Mukul participated in a Doordarshan panel discussion on ‘India & Oman’ on 17 December 2025 during the Prime Minister’s official visit to Oman.
- The Centre for International Relations organized EducationUSA’s Virtual Masterclass on Machine Learning on 18 December 2025 for SU students, led by expert faculty from the University of Texas, Dallas.
- Prof. J. S. Mukul was invited to DD India’s prime-time Newshour on 18 December 2025 to discuss India’s CEPA with Oman.
- Prof. J. S. Mukul was featured on Sansad TV’s Perspective programme on 19 December 2025 for a panel discussion on the historic India–Oman Free Trade Agreement.

— ✦ —

STUDENT ACHIEVEMENT

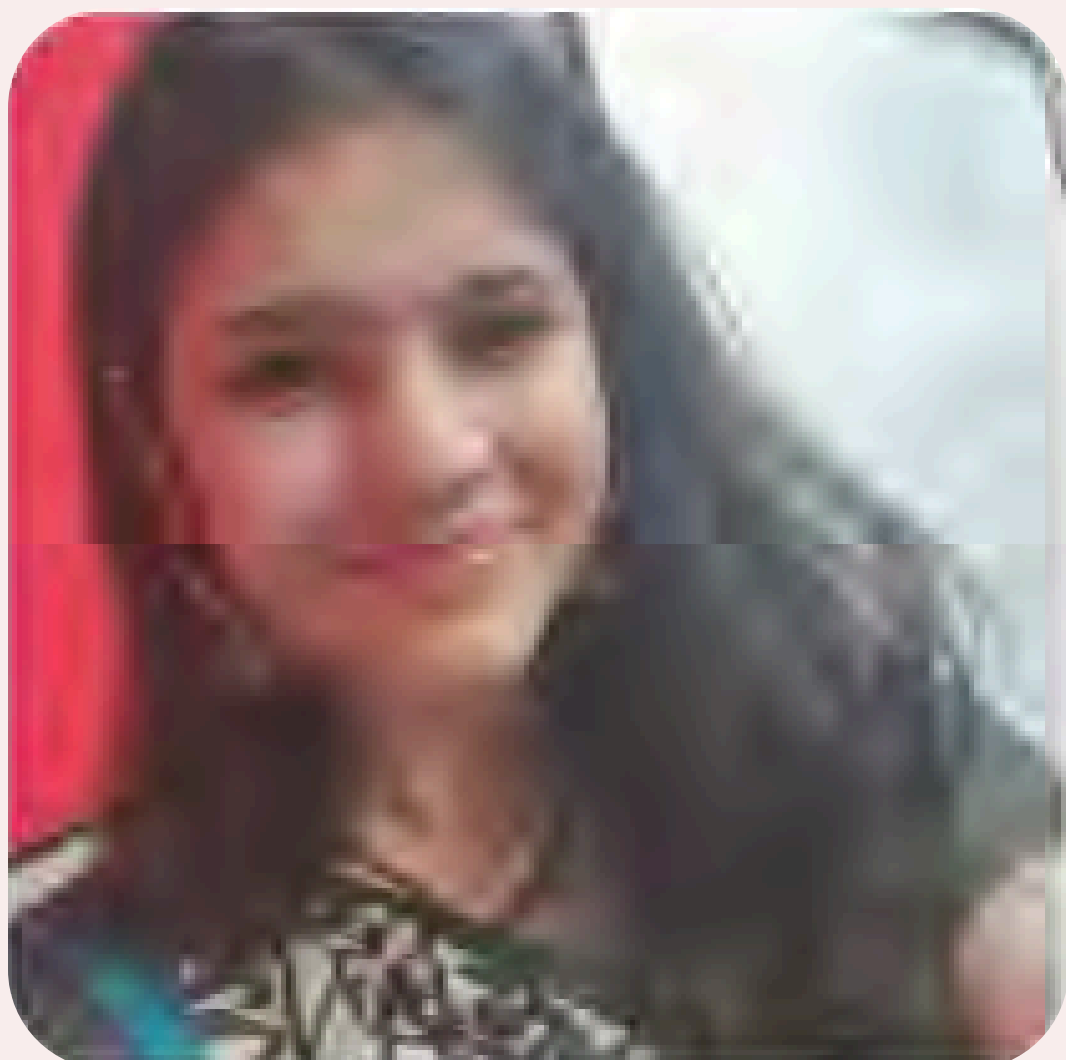
— ✦ —



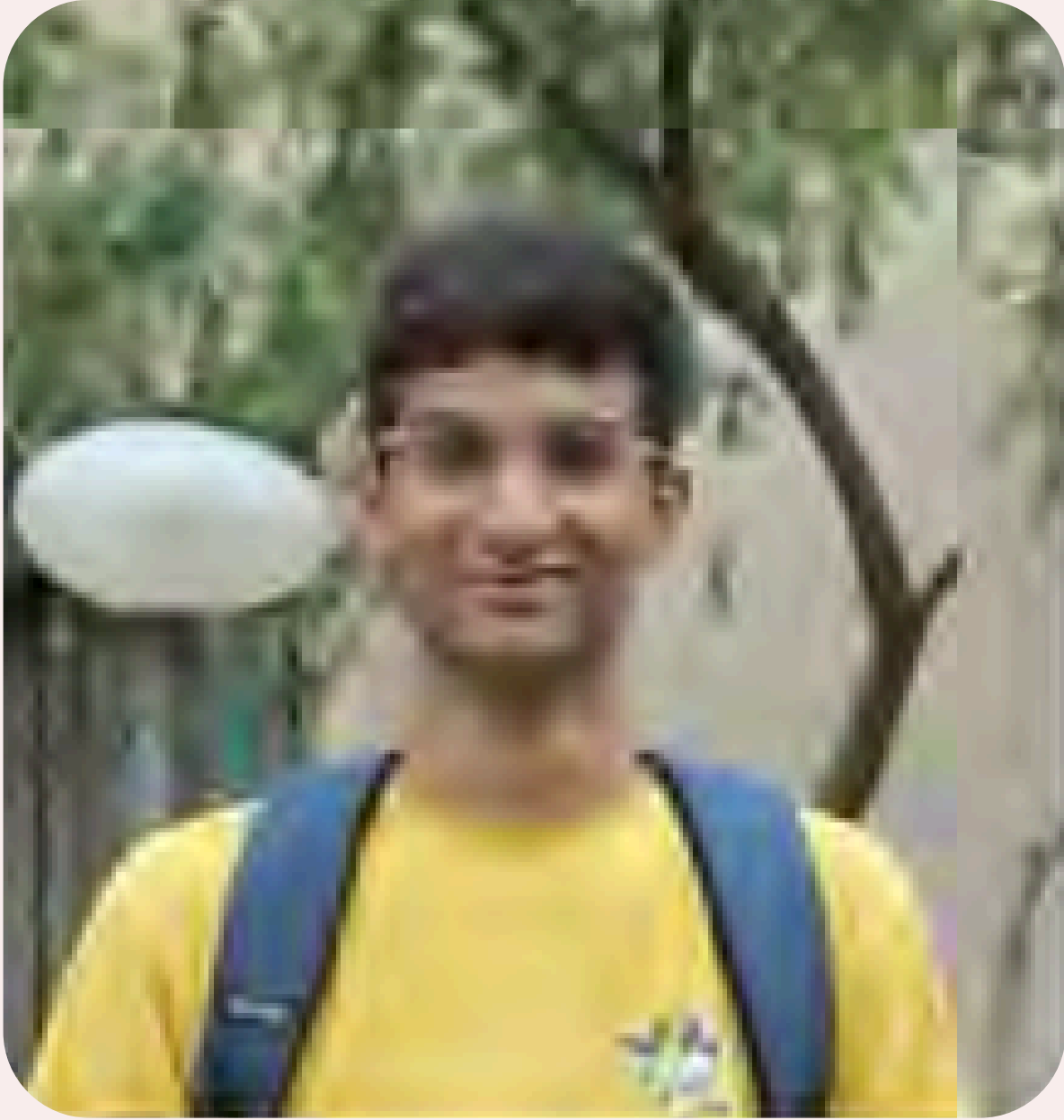


Standing proudly on a Delhi football ground, Sumit Kumar from BBA II Sem celebrated victory with a champions' trophy and individual award. His outstanding performances in district and local leagues reflected unwavering dedication, hard work, and rising success in competitive football, inspiring ambitions for zonal and B-Division levels ahead

Hamza Mohd received a Certificate of Appreciation from The NorthCap University for clinching First Position in the "Clash of Minds" event at Momentum 2025, the annual cultural and technical festival. Held on November 7-8, 2025, at the Gurugram campus, this honor celebrates his outstanding performance and valuable contribution to the competition.



Jayana Batra clinched Second Position in the "Clash of Minds" event at Momentum 2025, The NorthCap University's annual cultural and technical festival, held on November 7-8, 2025, at the Gurugram campus. Her achievement highlights strong analytical skills, confidence, and unwavering dedication.



On November 12, 2025, Sushant University's School of Business hosted UDAYA 3.0, an Inter-University Summer Internship Competition. Sameer Vats, a 2nd-year B.Tech CSE student from SET, won First Prize for his internship at ContactMe, an Agentic-AI Marketplace. He showcased contributions in AI prompt engineering, testing, and UI/UX, earning praise for technical clarity.

Tanishq Gupta (BBA Semester VI, School of Business) embarked on an inspiring solo journey to Bangkok, Thailand. Fueled by passion for exploration and growth, he joined Debloo Studio's leather crafting workshop, his first ever. He delivered an outstanding performance, earning mentors' appreciation, special recognition, gifts, and a Certificate of Participation.



Sritara from Sushant University's School of Engineering and Technology (SET) earned 2nd Runner-Up at Miss Teen Universe 2025. Competing against global talents, she showcased confidence, intelligence, cultural awareness, and stage presence. Her success highlights personal dedication, perseverance, and SET's holistic focus on leadership and creativity, inspiring young women everywhere.

Unnati, a BTech student, represented her institute as a key team member in the North Zone Badminton Competition. On December 14, 2025, her team delivered an outstanding performance to secure the Bronze Medal, showcasing skill, teamwork, and determination on a competitive stage.



Riya Soni, a final-year Communication Design student at Sushant University's School of Design, achieved a remarkable milestone. She illustrated and designed the cover for the novel "Daughter of Two Rivers" by Arun Krishnan, published by Penguin Random House India in their April 2025 release.

Sai Anand (B.Com, School of Business) secured 2nd position in the State Powerlifting Championship. He also earned the title of Second Strongest Sub-Junior in his category. This achievement highlights his dedication, discipline, and excellence beyond academics, serving as inspiration for peers and the university community.



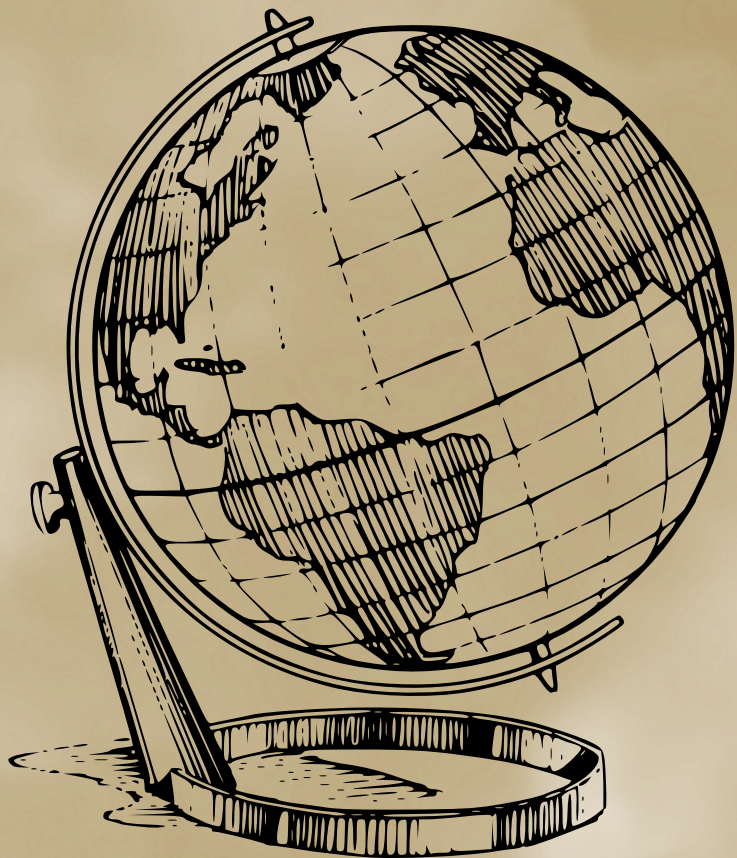
CENTRE FOR INTERNATIONAL RELATIONS

GLOBAL FOOTPRINTS

Sushant University's Bold Leap in Internationalisation



GLOBAL FOOTPRINTS: SUSHANT UNIVERSITY'S BOLD LEAP IN INTERNATIONALISATION



The Centre for International Relations proudly presents the onward march of I 'internationalisation' at Sushant University , including the conclusion of the following International MoUs during July - December 2025 :

1. Memorandum of Understanding (MoU) with William Paterson University (WPU), New Jersey, USA on 2nd September 2025 covering collaboration in student and faculty exchanges, internships, articulation arrangements like 2+2 pathway programmes, seminars, research, etc.
2. Memorandum of Understanding (MoU) with multinational start-up Auro.edu / Auro Sigma on 12th September 2025, which aligns with the SU objective of AI-driven delivery for skills upgradation, internships and job placements.
3. Memorandum of Understanding (MoU) with global organisation AIESEC on 25th September 2025 for foreign internships covering Art & Architecture, Design, Engineering & Technology, Business, Law and Health Sciences / Pharmacy.

4. Memorandum of Understanding (MoU) with German Academy of Digital Education (DADB), Germany on 14th October 2025 for IoT, 5G, etc. courses primarily for School of Engineering & Technology students.

5. Memorandum of Understanding (MoU) with Aivancity School of AI and Data for Business & Society, France on 15th October regarding AI-based Data Engineering for School of Engineering & Technology and Data Analytics for School of Business.

6. Memorandum of Understanding (MoU) with Mod'Art of Paris, France on 21st November 2025 for cooperation in creative fields with the School of Design.



CAMPUS CHRONICLES



PRARAMBH



Orientation 2025

 4th - 5th August, 2025

We welcome our brilliant new minds to the
Sushant University family

प्रारम्भ

Campus Unlocked | Induction Program | Insightful Dialogue
Experiential Visits | Icebreaker Sessions

www.sushantuniversity.edu.in | 1800-270-5520

CANTEEN CRAVE



UDBHAV

Sushant
University
soaring high

Welcoming All Freshers!

Udbhav

FRESHER'S BASH

9th October, 2025

Embrace Fresh Starts, Cherish Moments,
and Let Your Talents Shine

SCAN
TO REGISTER



Sushant University, Gurugram

www.sushantuniversity.edu.in | 1800-270-5520

TASHANBAAZ

Sushant University
soaring high

superhits
RED FM 93.5
Bajaate Rave!

RED FM COLLEGE KE
TASHANBAAZ
BE THE G.O.A.T

Friday | 12:00PM Onwards
19th SEPTEMBER, 2025
Venue : Amphitheatre, A Block

REGISTER NOW ON
www.collegeketashanbaaz.in

SCHOOL MAGAZINE SECTION

DESIGN



HEALTH SCIENCE



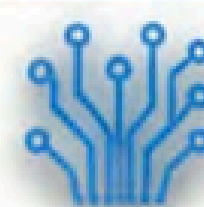
ARCHITECTURE



BUSINESS



TECHNOLOGY



LAW



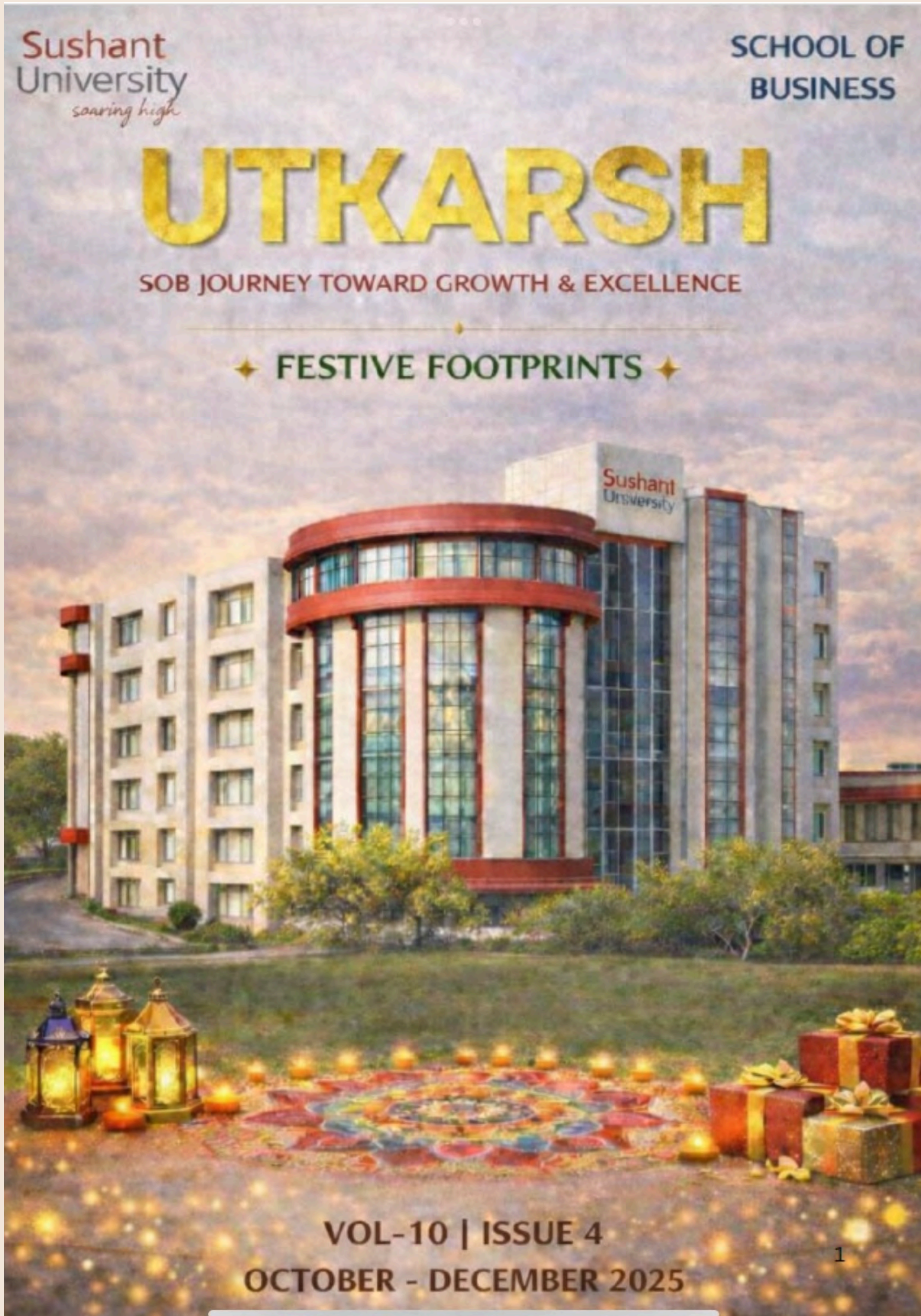
HOTEL MANAGEMENT



featuring student publications
from across the campus

SCHOOL MAGAZINE

School of Business



SCHOOL MAGAZINE

School of Health Science

Sushant
University
soaring high

OCTOBER-DECEMBER 2025

HEALTHINEERS

VOLUME 6, ISSUE 2 Newsletter of School of Health Sciences



WELCOME TO THE SCHOOL OF HEALTH SCIENCES. WE AT SCHOOL OF HEALTH SCIENCES AT SUSHANT UNIVERSITY BELIEVE IN "BUILDING A BETTER TOMORROW BY DISCOVERING, UNDERSTANDING, CONTRIBUTING & HEALING"

IN THIS ISSUE

- EVENTS AT A GLANCE
- STUDENTS' ACHIEVEMENT
- FACULTY ACHIEVEMENTS



Sushant University Sector 55, Golf Course Road, Gurugram - 122003 Haryana

SCHOOL MAGAZINE

School of Architecture

Sushant
University
soaring high

AA School of
Art and
Architecture

ART ARCHITECTURE CITIES



2025 SAA
NEWSLETTER
JULY TO
DECEMBER

SCHOOL MAGAZINE

School of Engineering



ABHIYANTRIKI

Official Newsletter of
SCHOOL OF ENGINEERING AND TECHNOLOGY

Sushant
University
soaring high

VOL-7

Issue-4

OCT- DEC 2025

• EVENTS • FESTIVALS • CLUB CORNER • ACHIEVEMENTS

SCHOOL MAGAZINE

School of Law



SCHOOL MAGAZINE

School of Design

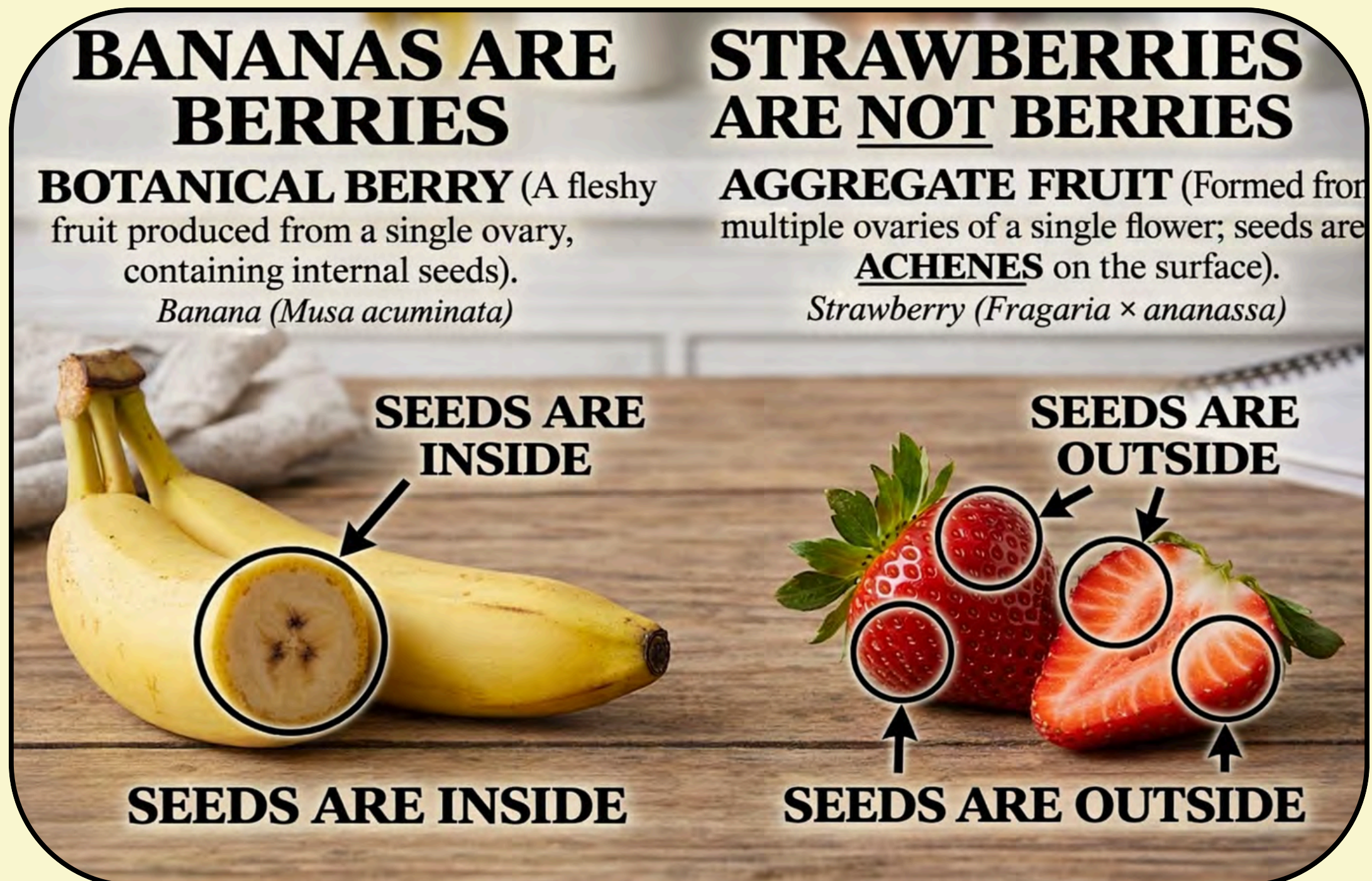


DID YOU KNOW?



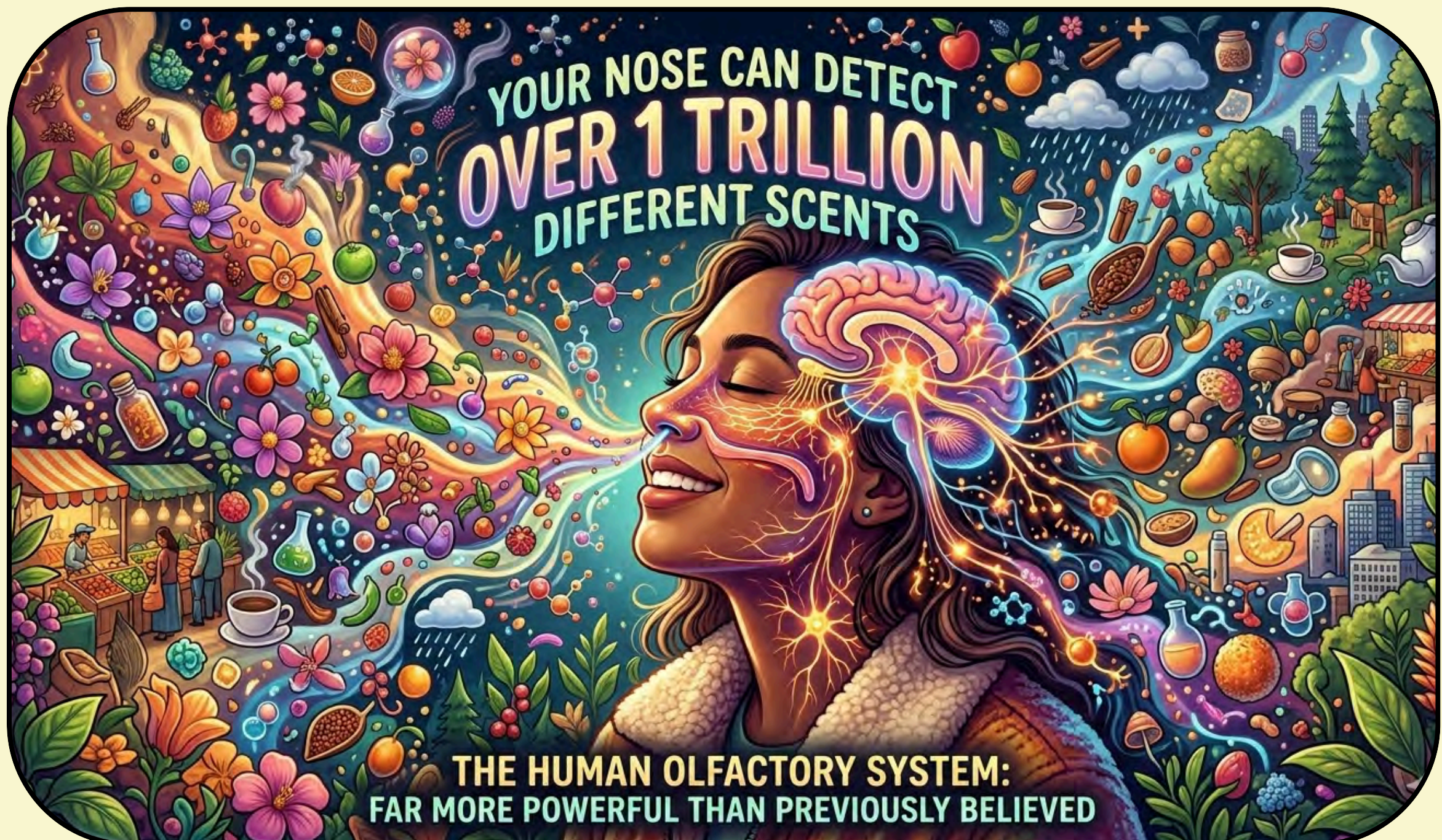
FASCINATING FACTS & CURIOUS DISCOVERIES





Bananas are berries — but strawberries aren't!

Botanically, bananas qualify as berries, while strawberries do not because their seeds are on the outside.



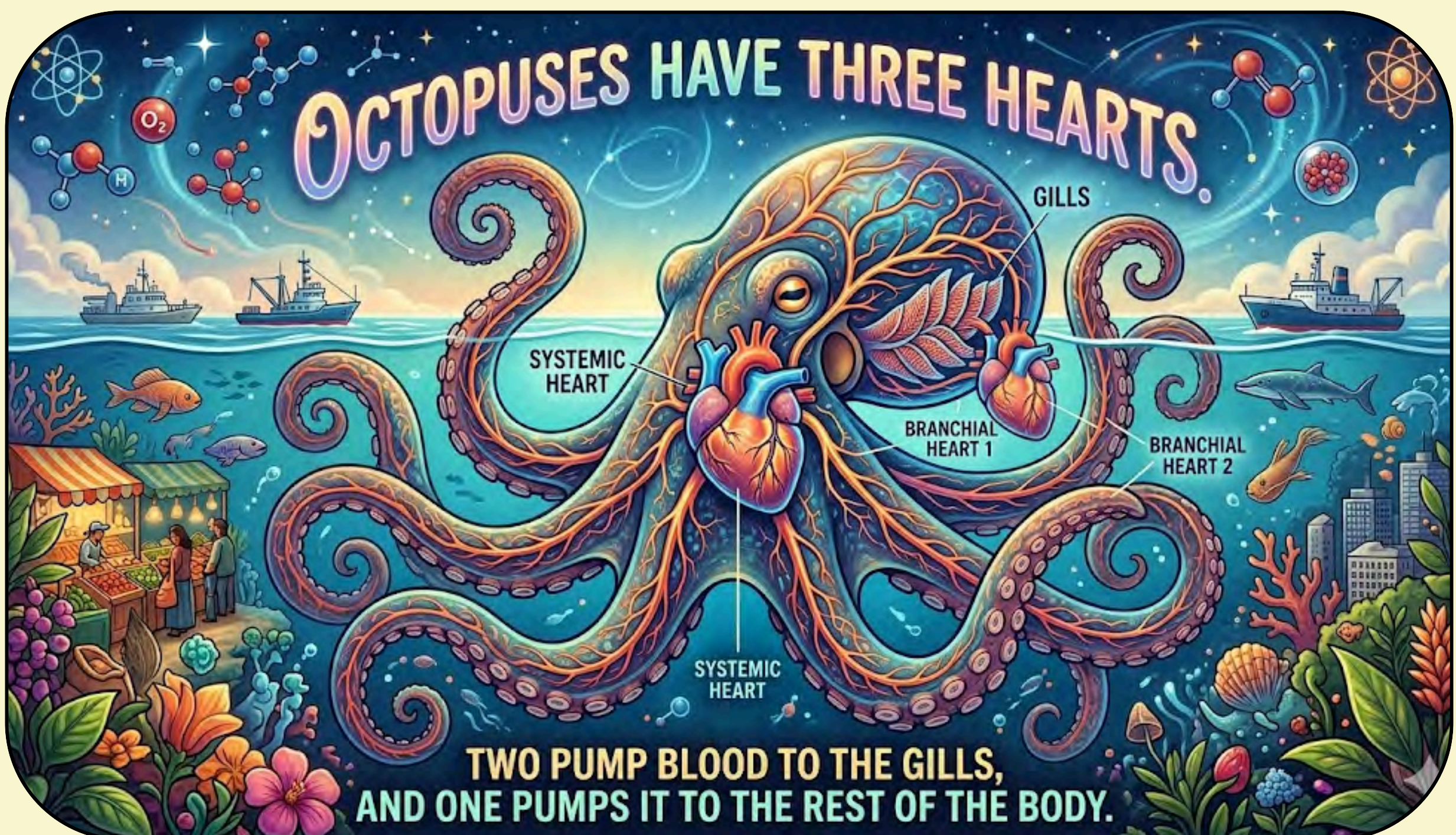
Your nose can detect over 1 trillion different scents.

The human olfactory system is far more powerful than previously believed.



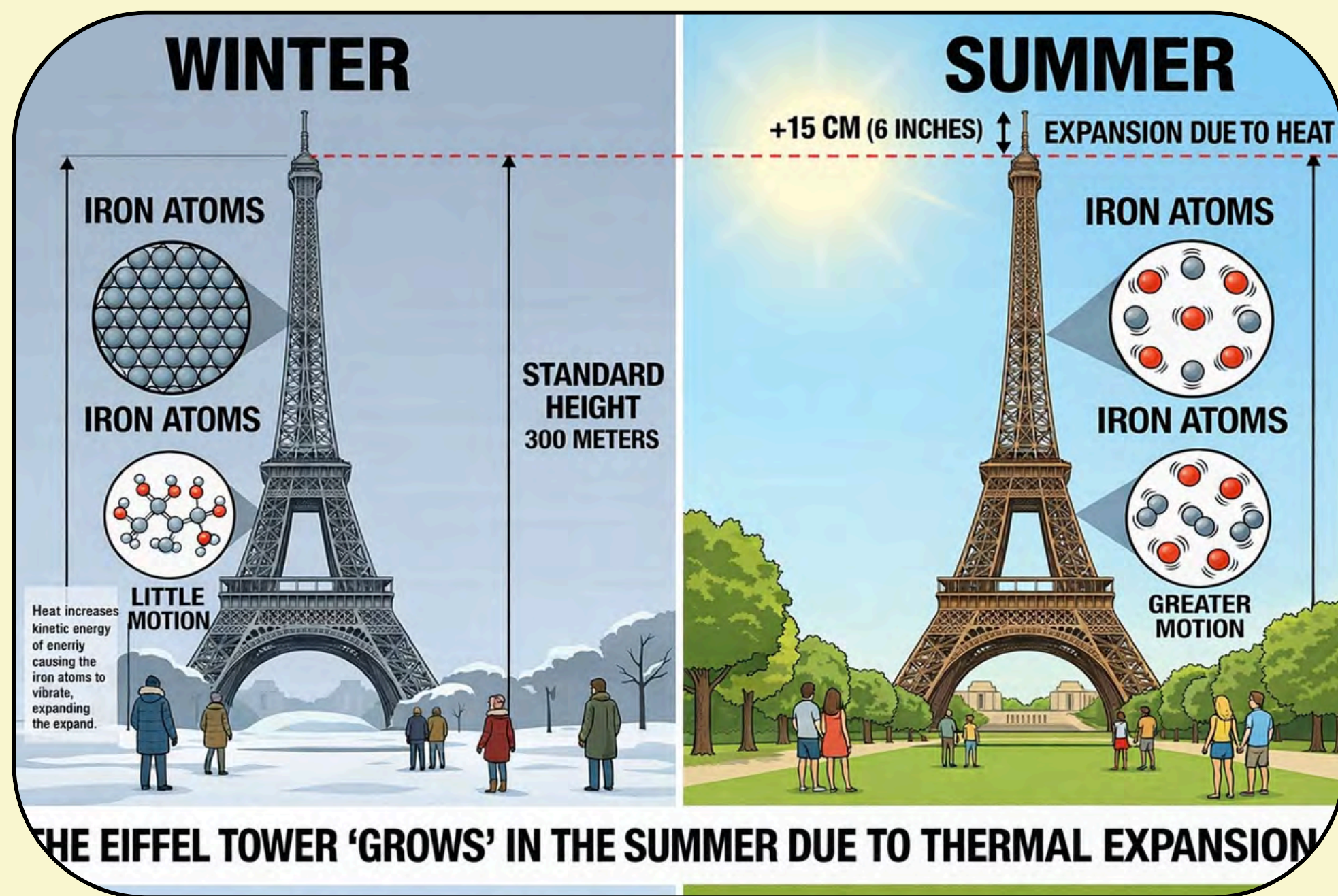
Honey never spoils.

Archaeologists found pots of honey in ancient Egyptian tombs that were still perfectly edible.



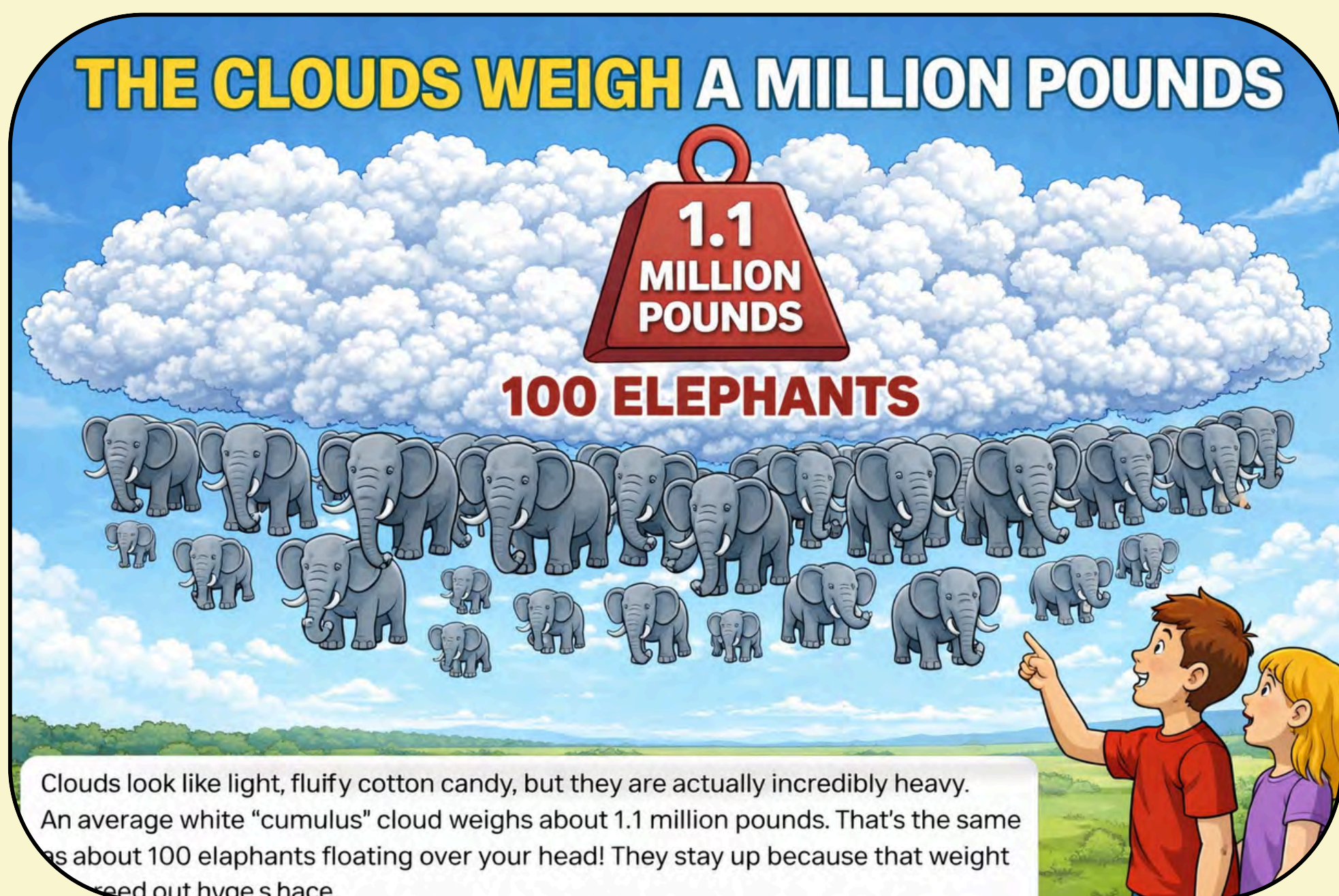
Octopuses have three hearts.

Two pump blood to the gills, and one pumps it to the rest of the body.



The Eiffel Tower "Grows" in the Summer

Because of a science trick called thermal expansion, the iron in the Eiffel Tower expands when it gets hot. In the heat of the summer, the tower can grow by about 6 inches (15 centimeters). When it cools down in winter, it shrinks back to its normal size.

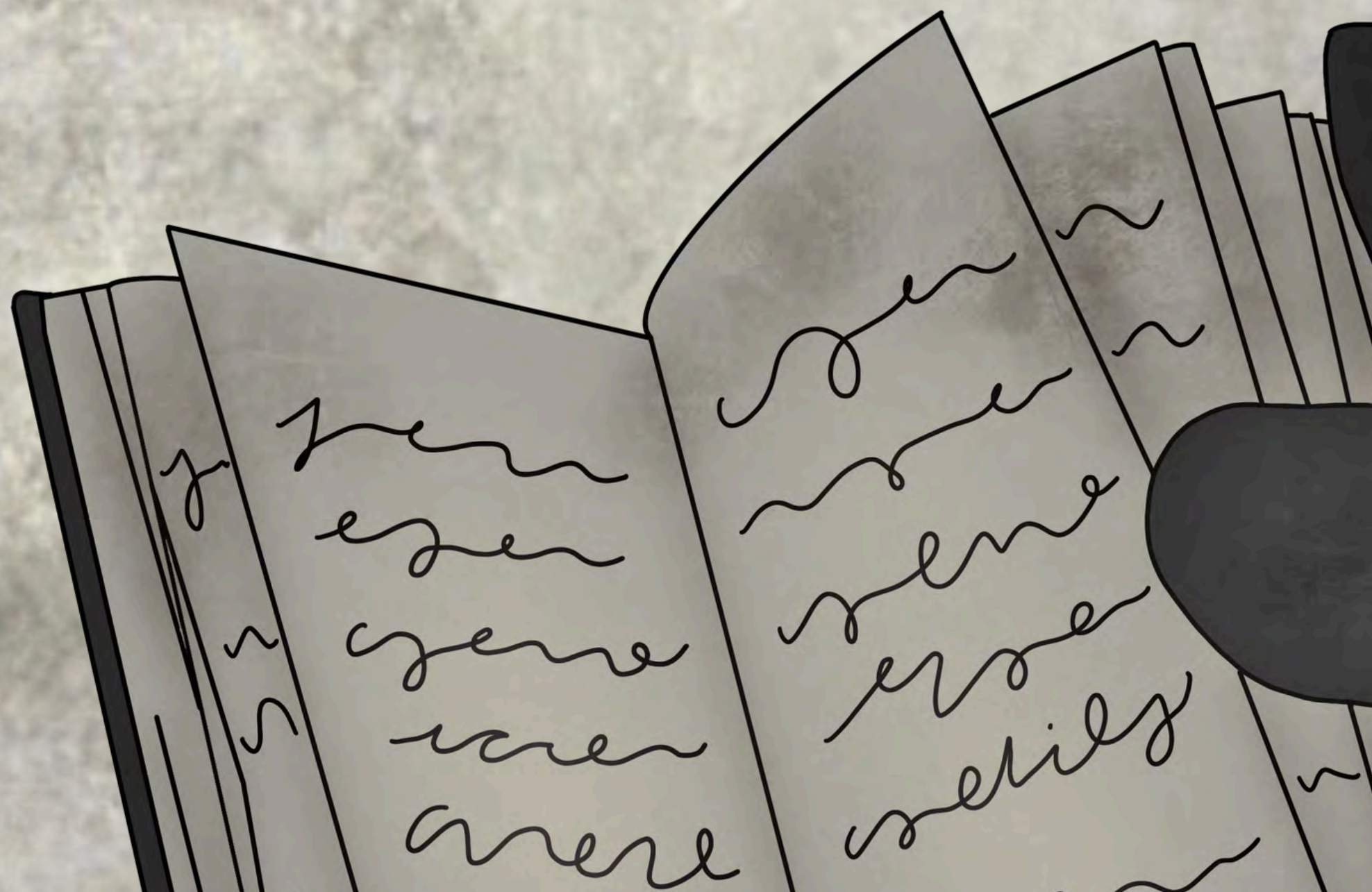


The Clouds Weigh a Million Pounds

Clouds look like light, fluffy cotton candy, but they are actually incredibly heavy. An average white "cumulus" cloud weighs about 1.1 million pounds. That's the same as about 100 elephants floating over your head! They stay up because that weight is spread out over a huge space.

इतिहास के झरोखे से

FROM HISTORY



HISTORY

THE FALL OF THE BERLIN WALL (1989)

On November 9, 1989, the Berlin Wall, which had separated East and West Berlin for 28 years, suddenly opened, allowing thousands of people to cross freely and celebrate the end of a divided city. The Wall was built in 1961 by East Germany to stop its citizens from escaping to the West. It stood as a symbol of the Cold War and the division between communist Eastern Europe and capitalist Western Europe.

The Berlin Wall was not just one wall but two. Stretching 155 kilometres (96 miles) and standing four meters (13 feet) tall, these barriers were separated by a heavily guarded, mined corridor called the “death strip.” In 1989, the Wall was lined with 302 watchtowers, manned by guards who had orders to shoot anyone attempting to cross. Over the 28 years of its existence, more than 140 people died trying to escape East Berlin, making the Wall a deadly symbol of division and oppression.



On the night of November 9, 1989, during a press conference, East German spokesman Günter Schabowski accidentally announced that East Germans would be free to travel to West Germany immediately. However, he failed to clarify that some regulations would still apply. Western media quickly reported that the border was open, causing crowds to rush to the checkpoints on both sides of the Wall. Border guards, overwhelmed by the masses and unsure of how to respond, did not stop the crowds and eventually opened the gates.

What followed was a night of celebration and reunion as thousands crossed freely between East and West Berlin. People greeted each other with flowers and cheers, while many climbed the Wall itself, dancing and chipping away at it with hammers. The Wall's fall symbolised the end of the Cold War's physical division between East and West Germany and eventually led to German reunification less than a year later. It also symbolised the collapse of communist control across Eastern Europe and the Cold War itself.

For young people today, it serves as a powerful example of how peaceful protests, a strong desire for freedom, and unexpected moments can bring down even the strongest barriers.



THE GREAT EMU WAR OF AUSTRALIA (1932)

The Great Emu War of 1932 is one of history's most bizarre and hilarious moments: a full-blown military operation against large flightless birds that Australia quite literally lost. Imagine soldiers armed with machine guns, tasked to “win” a war against 20,000 emus, but those birds effortlessly outsmarted them at every turn

It all started when farmers in Western Australia cried for help. After World War I, many had taken up farming as soldier-settlers, but a harsh drought destroyed their wheat fields. To make matters worse, thousands of emus marched into their farmland, trampling crops and breaking fences. Seeking government help, the farmers got it—but instead of pest control experts, the military arrived.

The Minister of Defence, Sir George Pearce, approved the deployment of Royal Australian Artillery personnel. Major G.P.W. Meredith commanded Sergeant S. McMurray and Gunner J. O'Halloran, equipped with two Lewis light machine guns and 10,000 rounds of ammunition. The operation began on November 2. Initial efforts aimed at

ambushes failed as emus scattered into small groups, running at speeds up to 50 kilometers per hour. The birds' tough bodies withstood many hits, and feathers jammed the guns. Over the first week, thousands of rounds yielded fewer than 500 confirmed kills.



Media coverage turned the event into the “Emu War,” drawing national ridicule. Newspapers reported low success rates, and parliament debated the operation, with members questioning its effectiveness. On November 8, after firing 2,500 rounds for limited results, the military withdrew. A second phase in December achieved about 100 kills per week, but the total remained under 1,000, far short of the 20,000 target.

The operation highlighted challenges in wildlife management and the difficulties of using military tactics against mobile, resilient animals. Farmers later relied on bounties and stronger fences, which proved more effective. Though a failure militarily, the Emu War underscores the unpredictability of nature and the limits of human intervention in harsh environments.

This event offers a striking example of how even advanced technology can falter against natural adaptability. It combines historical context with an unusual narrative that prompts reflection on agriculture, policy, and unintended consequences.



THE YOUNG REVOLUTION: HOW INDIA'S STUDENTS HAVE ALWAYS CHANGED HISTORY

If history were only written by rulers, India's story would feel unfinished. Much of its turning points begin with young people who were curious, impatient and unwilling to wait for their time to come. Long before campuses filled with slogans, India's streets, courtyards and colleges echoed with student voices asking for change.

Swadeshi Movement (Early 1900s)

The early 1900s showed how powerful youth could be. In Bengal, students organised boycotts of British goods and handed out secret pamphlets. Their classrooms spilled outdoors, where posters doubled as lessons. This was the birth of a new kind of protester: young, vocal and determined.



Swadeshi Movement (Early 1900s)

The early 1900s showed how powerful youth could be. In Bengal, students organised boycotts of British goods and handed out secret pamphlets. Their classrooms spilled outdoors where posters doubled as lessons. This was the birth of a new kind of protester: young, vocal and determined.

When Quit India began in 1942, students moved first. Colleges turned into safe houses and message networks. Many were teenagers, some still in school uniforms, who carried letters, courted arrest and believed independence belonged to them as much as to older leaders. Their courage in places like Gaya and Vidyasagar College became part of the movement's memory.

JP Movement and the Emergency (1970s)

The same spirit appeared again in the 1970s during the JP Movement. What began outside parliament soon grew into a student-driven call against corruption. Even under the Emergency, when censorship and arrests were common, discussion and dissent found space inside campuses. Young voices refused to be quiet.



Imagination in Action

Yet it wasn't only a protest. Students also tried building alternatives. Literacy drives, self-help committees, women's groups and student newspapers came up during different movements. Many of the rights and systems we take for granted were tested first in student circles.

Why Youth Matters

Youth matters because students hold two qualities many lose later: idealism and courage. They see change as something possible rather than risky. They ask "why not" and that question alone can loosen old structures.



The Student Union Today

Today's Student Union brings together medicine, hospitality, architecture, technology, design and more. It reminds us that real change needs different kinds of thinkers. A doctor treats bodies, an architect shapes cities, an engineer builds systems and a designer influences culture. Together, they do not simply react to society. They help reimagine it.

The Next Revolution

Maybe the next big shift will not start in parliament but inside hostel courtyards and studio corridors. Many Indian breakthroughs began as quiet conversations between students. Youth is not only the future. They are the driving force now. So the real question is simple:

What will you choose to change next?

WHEN 21 LIONS ROARED: THE LEGEND OF SARAGARHI

Battle of Saragarhi (1897)

The story of 21 heroes who chose duty over life. On 12 September 1897, at a remote post in the North-West Frontier Province (now Pakistan, 21 soldiers of the 36th Sikh Regiment faced an unimaginable attack by over 10,000 Afghan tribesmen. Instead of surrendering, these brave men chose to defend Saragarhi, knowing they were outnumbered.



Led by Havildar Ishar Singh, the soldiers fought with extraordinary courage, holding the enemy back for nearly seven hours, giving vital time for neighbouring forts to prepare.

Every soldier died fighting, but their sacrifice became a symbol of unmatched bravery.

The British Parliament declared the battle one of the greatest last stands in military history, and all 21 soldiers were awarded the Indian Order of Merit, the highest bravery award of that time.

Today, this day is honoured as Saragarhi Day, inspiring generations with the motto: “It is better to die fighting than to live in fear.”

THE DISCOVERY OF TUTANKHAMUN'S TOMB (1922)

The discovery of Tutankhamun's tomb in 1922 is one of the most important archaeological events of the twentieth century. It not only uncovered treasures but also reintroduced the world to Egyptian craftsmanship and architectural symbolism.

The tomb was hidden beneath the sands of the Valley of the Kings and had explorers as visitors for centuries but was preserved from robbers. Its discovery would redefine the world's understanding of pharaonic burial practices and the architectural sophistication of the New Kingdom.

By the early 20th century, the Valley of the Kings had largely been marked by excavations and many archaeologists believed that there wasn't any significant object left to be discovered. Still, British archaeologist Howard Carter wasn't convinced by this assumption. He suggested his belief by taking hints from earlier excavations and the absence of Tutankhamun's funerary record. The limestone cliffs in the west of Luxor in the Valley is an architectural landscape in itself. They are large cemeteries designed with deliberate isolation and symbolism which reinforces the ideas of rebirth and divine protection.



On November 4, 1922, Carter's team discovered a flight of steps leading to a sealed doorway bearing the royal seal. Weeks later, when he made the famous "small breach," Carter saw what he referred to as "wonderful things"- gilt couches, chests, statues and treasures shining in the light of a flickering candle. Further down the way lay the remains of Tutankhamun within a set of ornately carved coffins and a shrine-like series of wooden, gold covered structures fitted together with precision. These nested coffins showed the

Egyptian concept of layered protection similar to something hierarchies in temple design.

The modest design of this tomb was different to the grand royal burials. It offered a rare glimpse into the pressures of hurried construction. Tutankhamun died unexpectedly when he was young and many historians believe this tomb was originally prepared for a lesser noble but was then taken for his use. These narratives make the orderly arrangement of chambers, the painted ceilings and limestone corridors even more interesting. Even though the tomb is smaller in scale, it still follows the symbolic progression from life to death and on to eternity.

Its discovery set off a new discourse for conversations shaping art, design and architecture for decades. The resultant "Egyptomania" was seen everywhere from movie theatres to the ornamental style of Art Deco. Even more importantly, Tutankhamun's tomb set a new standard in terms of archaeological method: meticulous excavation, careful documentation and preservation techniques which continue to influence architectural conservation practice even today.

THE BURNING OF NALANDA UNIVERSITY (1193)

It was one of history's greatest losses of knowledge when Nalanda University burned down in 1193. Once the world's largest center of learning, Nalanda was a vibrant academic city where philosophy, astronomy, mathematics, medicine and Buddhist studies thrived for nearly 700 years.

The university was more than an institution, it was an architectural marvel where spatial planning supported intellectual exchange and communal life.

Founded in the 5th century CE during the Gupta period, Nalanda grew into a monastery/ academic complex with multiple temples, meditation halls, lecture spaces and libraries. Historical accounts describe the richly ornamented brick structures, extensive courtyards and multi-story dormitories which accommodated thousands of resident scholars. The campus was laid out with a clarity that modern universities still lack like axial pathways, symmetrically placed monasteries and highly ventilated study rooms that made it a comfortable space in the harsh climate of the region.



This thriving world changed dramatically with the coming of Bakhtiyar Khilji who was a general of the Ghurid dynasty. His greed for more territory and the need to oppose resistance brought Khilji's forces right across the area. When they came to Nalanda, they came upon an institution of learning with intellectual life which was a source of strength and was also seen as a threat because of its honor and prestige. In 1193, the complex was put to flame, an act which resulted in the destruction of one of the greatest libraries of the ancient world.

Nalanda's library system, known as the Dharmaganja, contained hundreds of thousands of manuscripts. The eyewitnesses said the libraries burned for months because the collection was so vast and the palm-leaf manuscripts were so densely packed. Architectural details played an important role here, like the libraries were built as huge multi-storey structures with wooden furnishings that fueled the flames even higher.

The architectural ruins still reveal a great deal of the detailing of Nalanda's planning, for instance, the repetitive arrangement of monastic cells around courtyards shows an understanding of modular design. Many of the stupas and temples that were richly carved, exhibit techniques in brick bonding and terracotta ornamentation that were very rare for those times. Even in ruin, the institution communicates its grandeur which is a testament to the harmony between built form and intellectual purpose. The burning of Nalanda was thus not the mere demolition of an institution but an erasure of knowledge that was critical to cultural and philosophical development across Asia. The act stands out as a reminder that architecture preserves knowledge and the loss of built heritage echoes much beyond the loss itself.

भारतीय ज्ञान परंपरा

INDIAN KNOWLEDGE SYSTEM

THE SALT THAT DISAPPEARED: A TIMELESS LESSON FROM THE UPANISHADS



Long before our modern self-help books flooded the shelves, ancient India had already mastered the art of explaining profound truths through everyday stories. One such gem comes from the Chandogya Upanishad, a scripture that dates back nearly 3,000 years—yet its wisdom feels astonishingly fresh today. The tale begins with a simple classroom moment between a father and his curious son, Śvetaketu. Like any young student proud of his learning, Śvetaketu thought he knew it all. The father sensed this arrogance and decided to teach him something no textbook could: the nature of the true Self.

He asked the boy to bring a bowl of water and place a lump of salt in it overnight. The next morning, the salt had completely dissolved. When Śvetaketu looked into the bowl, he could no longer see the salt. So the father asked him to taste the water from different spots. Every sip was salty.

“You cannot see the salt,” he said, “yet it is present everywhere. Just like the Ātman—your inner Self—present in all beings, though invisible to the eyes.”

How often do we chase things we can see—marks, medals, likes, impressions—while forgetting that the most powerful qualities are invisible? Compassion, integrity, discipline, awareness, kindness. These are the “salt” of our lives. We don’t always notice them, but they quietly flavour everything we do.

Why this lesson matters today

In a world obsessed with appearances, the Upanishadic metaphor feels almost revolutionary. It reminds us that the essence of a person is not found in their achievements, clothing, grades, or social status—but in the unseen values that shape their decisions and interactions.

For students, this teaching holds rare clarity:

Your Self-worth is not dependent on the visible. What truly defines you is subtle—your mindset, your consistency, your empathy, your ability to stay grounded.

Goodness doesn’t demand attention. Like salt in water, genuine character quietly pervades everything you do.

Learning is not memorising but realising. Śvetaketu had mastered knowledge, but not wisdom. Many of us do the same—studying for marks, not meaning.

The heart of the message

The Upanishadic story gently breaks our illusion that life is only about what we can see. It tells us:

Become aware of the invisible within you.

Because the deeper your inner strength, the richer your outer world becomes.

And perhaps that is why this ancient story still lingers—simple, subtle, and forever salty.

AYURVEDA & RASAYANA THERAPY: ANCIENT CONCEPTS OF IMMUNITY AND LONGEVITY



ALong before modern immunology emerged, India’s ancient Ayurvedic texts explored ways to strengthen the body’s natural defense systems, enhance vitality, and promote longevity. The specialized branch known as Rasayana Therapy focuses on rejuvenation, diseaseprevention, and restoration of physical and mental strength

Rasayana is not just a treatment—it's a philosophy of life that blends diet, herbs, meditation, behavior, and spiritual discipline. Cosmic Roots of Ayurveda: A Brief Ancient Story

“The Rasayana of the Seven Sages and the Cosmic Nectar”

According to ancient Vedic lore, in the earliest ages of the universe, the Sapta Rishis—the Seven Sages—lived as celestial beings who traveled between worlds to understand the mysteries of creation. During their cosmic journeys, they observed how stars lived for billions of years, constantly renewing their energy. Curious about this longevity, they sought a way to bring similar vitality to human beings. One of the Rishis, Atri, meditated for a thousand years near a meteorite-fallen site believed to contain heavenly minerals. It is said that during this meditation, he received a vision from Lord Dhanvantari, the divine physician, who appeared carrying a shimmering pot of Amrita—the nectar of immortality. Dhanvantari revealed: “Immortality is not granted to humans, but resilience, strength, and long life can be cultivated. What flows through the stars also flows within you.” He taught them the first principles of Rasayana—herbs such as Amalaki, Guduchi, Haritaki, minerals purified from celestial-stone deposits, yogic breathwork,

mental purity, and seasonal living. The Sapta Rishis carried these teachings back to Earth, becoming the early transmitters of Ayurvedic longevity practices.

This myth symbolises Ayurveda’s belief that Human health is intertwined with cosmic rhythms, and that rejuvenation is achieved by harmonising the body with nature and the universe.



Dhanvantari Bhagwan

UNDERSTANDING RASAYANA: THE SCIENCE OF REJNATION

1. Immunity (Ojas)

Enhancement

In Rasayana, immunity is linked to Ojas, the subtle essence of all bodily tissues. Ojas is strengthened by nutritious diets, herbs, detoxification, and mental tranquility.

2. Longevity Through

Balance

Rasayana aims to maintain the equilibrium of the doshas—Vata, Pitta, and Kapha. Balanced doshas create internal harmony that slows aging and disease.

3. Cellular Rejuvenation

Ancient texts describe Rasayana herbs as dhatu-poshaka (tissuenourishing) and vrishya (revitalizing). Modern research links many Rasayana herbs with antioxidant, adaptogenic, and antiinflammatory properties.



Key Rasayana Herbs

- Amalaki (Indian Gooseberry): Rich in Vitamin C, enhances immunity •
- Guduchi (Giloy): A powerful adaptogen
- Ashwagandha: Boosts strength and resilience
- Haritaki: Known as the “King of Medicines”
- Shilajit: Mineral-rich substance linked to energy and vitality

Mind-Body Practices in Rasayana

- Meditation & Pranayama: Improves mental clarity and stress-resilience
- Dinacharya (Daily Routine): Aligns the body with natural cycles
- Sattvic Diet: Pure, plant-based foods that nurture Ojas

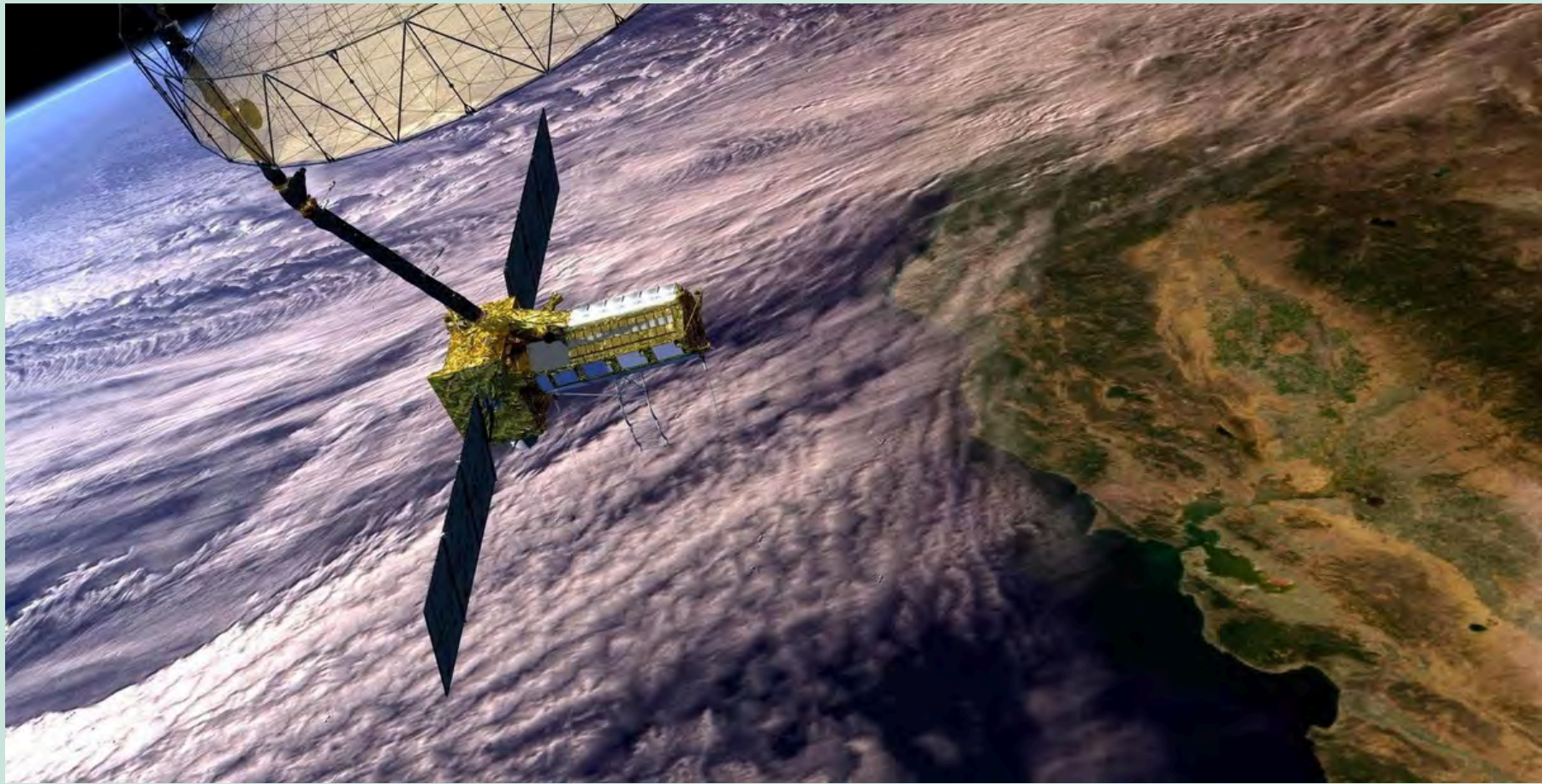




SCIENCE AND TECHNOLOGY



SPACE



NISAR MISSION LAUNCH

On July 30, 2025, NASA and ISRO launched the NISAR satellite, the world's first dual-band (L & S) radar imaging satellite. It provides frequent, detailed data on ecosystems, ice mass, and land surface changes.

DEFENCE

AGNI-PRIME RAIL-BASED TEST



On September 24, 2025, DRDO and the Strategic Forces Command successfully tested the Agni-Prime IRBM from a rail-mobile launcher. With a 2,000 km range, this next-gen missile enhances survivability, concealment.

क्वांटम तकनीक



क्वांटम की वितरण नेटवर्क

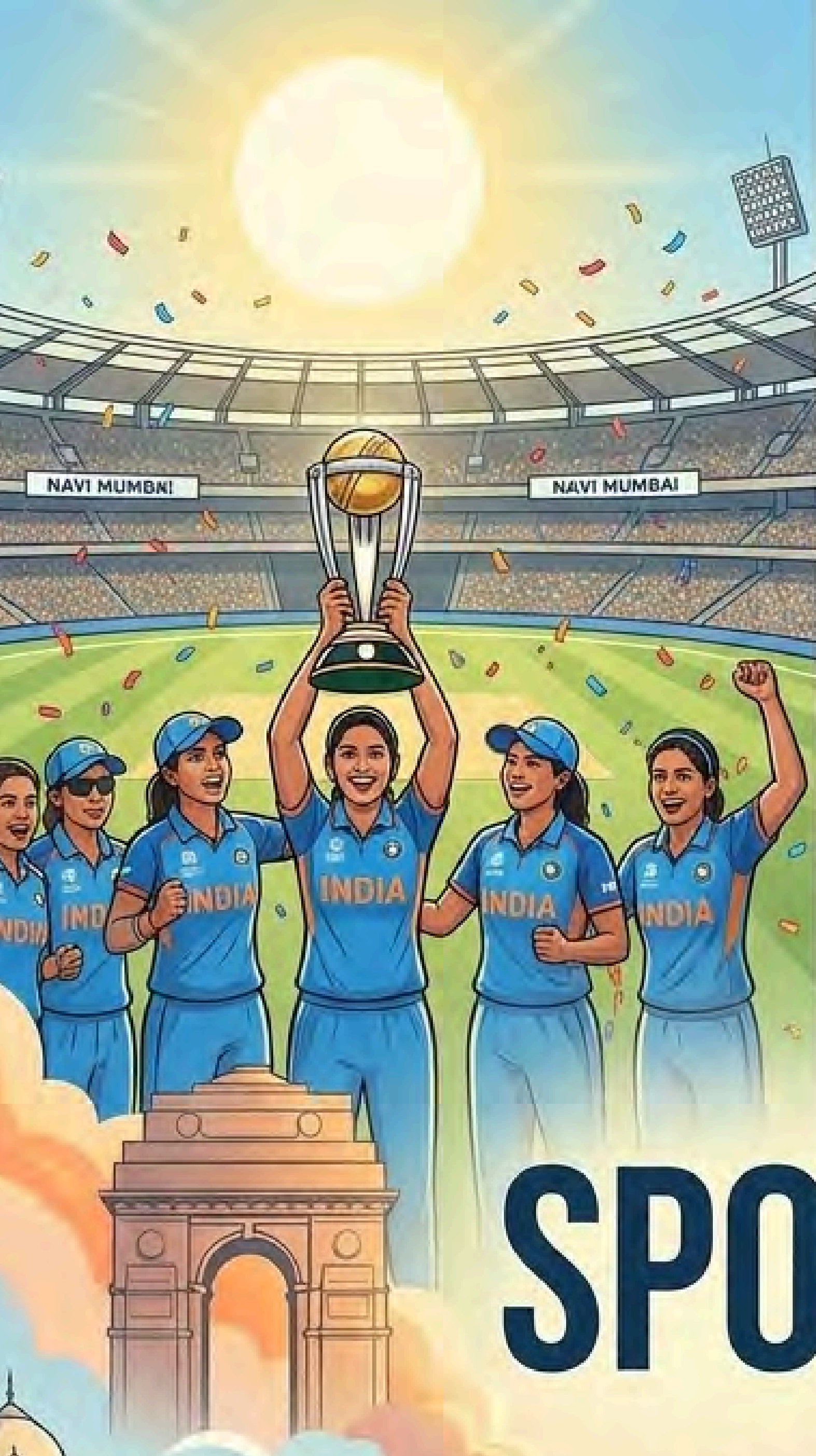
6 नवंबर 2025 को, बेंगलुरु स्थित QNu Labs ने भारत का पहला लंबी दूरी का QKD नेटवर्क प्रदर्शित किया, जो 500 किमी तक फैला हुआ है। यह नेटवर्क क्वांटम यांत्रिकी का उपयोग करके अत्यधिक सुरक्षित संचार सक्षम करता है

बायोटेक/स्वास्थ्य

ICMR ने देशी मेडिकल टेक्नोलॉजी को लाइसेंस दिया



नवंबर 2025 में, MeitY ने India AI Governance Guidelines जारी की, जिसमें सात सिद्धांत शामिल हैं जैसे कि ट्रस्ट, लोग पहले, और सुरक्षा। यह ढांचा नैतिक, सुरक्षित और समावेशी AI विकास को बढ़ावा देता है और डीपफेक्स और एल्गोरिदमिक बायस जैसी जोखिमों को कम करता है।



SPORTS



THE CROWN JEWEL: INDIA'S WOMEN'S WORLD CUP TRIUMPH



In a historic moment that etched itself into the annals of Indian cricket, the Indian Women's Cricket Team clinched their first-ever ODI World Cup title on November 2 in Navi Mumbai, stunning South Africa by 52 runs in a final brimming with drama and dominance. Captained with poise and powered by a collective fire, the team chased down a challenging target, setting 280 for nine before restricting the Proteas to 228 all out, their bowlers striking relentlessly in the middle overs to seal the victory. Shafali Verma emerged as the final's undisputed star, smashing a blistering 87 off just 61 balls with fearless strokeplay that dismantled the opposition attack and ignited the roaring home crowd. Complementing her fireworks, Deepti Sharma's all-round brilliance earned her the Player of the Tournament accolade, her wickets and economical spells proving pivotal throughout the campaign.

FORMULA 1: THE MCLAREN ERA BEGINS



In a thrilling Abu Dhabi finale, Lando Norris seized his maiden Drivers' Championship, beating Max Verstappen by just 2 points with masterful pressure handling on Yas Marina. McLaren clinched the Constructors' title, ending Red Bull's three-year dominance through Norris and Oscar Piastri's flawless teamwork and consistency across the season. This double victory cements Norris as a world champion and signals McLaren's full return to the front of the grid, backed by bold strategy and major car development gains. The result marks a dramatic power shift in Formula 1 and sets up an explosive new chapter in the Norris Verstappen rivalry.

ATHLETICS: THE CHANGING OF THE GUARD



Neeraj Chopra exemplified resilience by clinching Silver at the Diamond League Final after an uncharacteristic 8th-place finish at the Tokyo World Championships, his monster throws reaffirming his status as India's golden arm. Meanwhile, rising star Sachin Yadav burst onto the global scene with a stunning 4th-place finish in the javelin at Worlds, marking him as a world-class contender and signaling India's deepening dominance in the event. Together, their feats at these prestigious meets highlight a powerhouse generation of throwers, blending experience with raw talent to elevate the nation's athletics legacy.

TENNIS: THE ALCARAZ-SINNER DUOPOLY

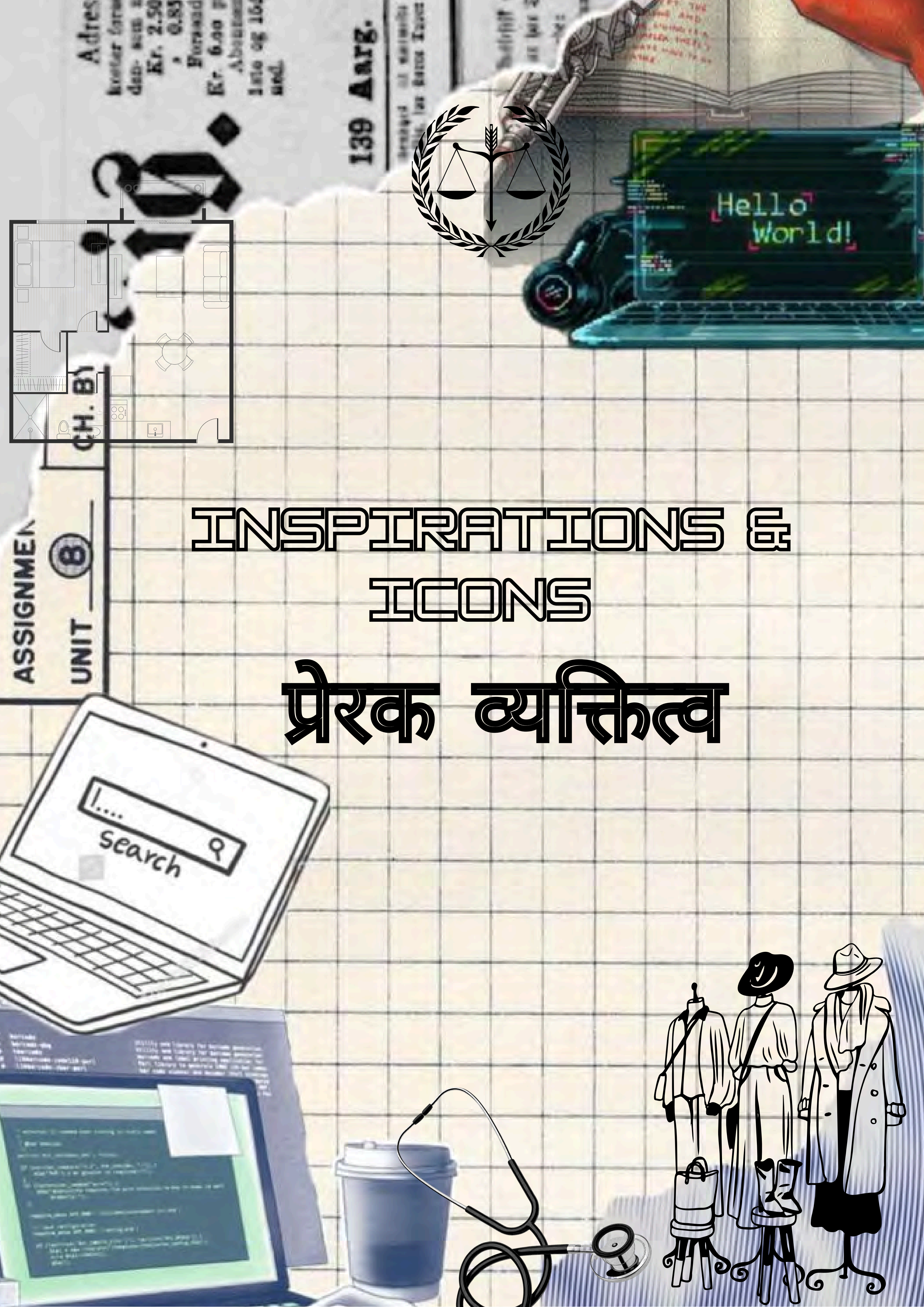


Jannik Sinner scripted history at Wimbledon by becoming the first Italian man to claim the SW19 title, powering through a grueling fortnight with his baseline firepower and ice-cool nerve to lift the iconic trophy on Centre Court. Across the Atlantic, Carlos Alcaraz reclaimed the World No. 1 ranking with a dominant US Open victory, securing his sixth Grand Slam in New York amid electric atmospheres and fierce five-set battles. These triumphs underscore a new era of tennis supremacy, with Sinner's breakthrough and Alcaraz's relentless ascent captivating fans and reshaping the ATP tour's elite landscape.

WOMEN'S BLIND CRICKET AND KABADDI TEAMS TRIUMPH ON WORLD STAGE

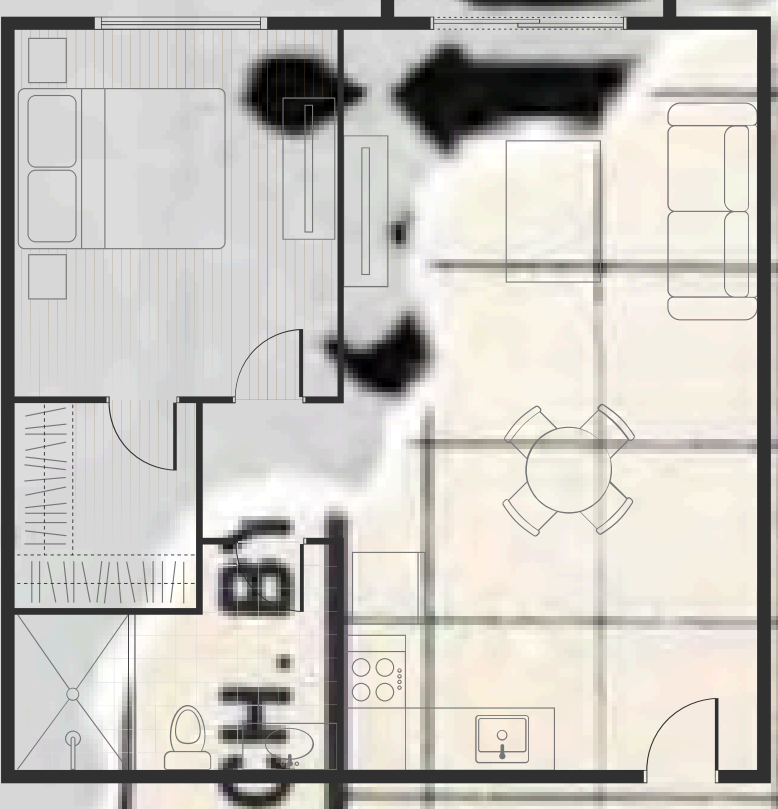


India's women athletes dominated 2025, with the Women's Blind Cricket Team clinching the inaugural T20 World Cup title in Colombo on November 23, defeating Nepal by 7 wickets at P. Sara Oval before meeting PM Modi and winning the CNN News18 Special Inspiring Champions Award. Just a day later, the Women's Kabaddi Team captured their second World Cup in Dhaka, beating Chinese Taipei in the first edition hosted outside India at Mirpur's Shaheed Suhrawardi Stadium. These back-to-back victories, echoing the sighted cricket team's ODI World Cup win, shatter gender barriers and inspire millions on the global stage.



Adress
København
Kr. 2.500
Kr. 6.000
Info og 16
ned.

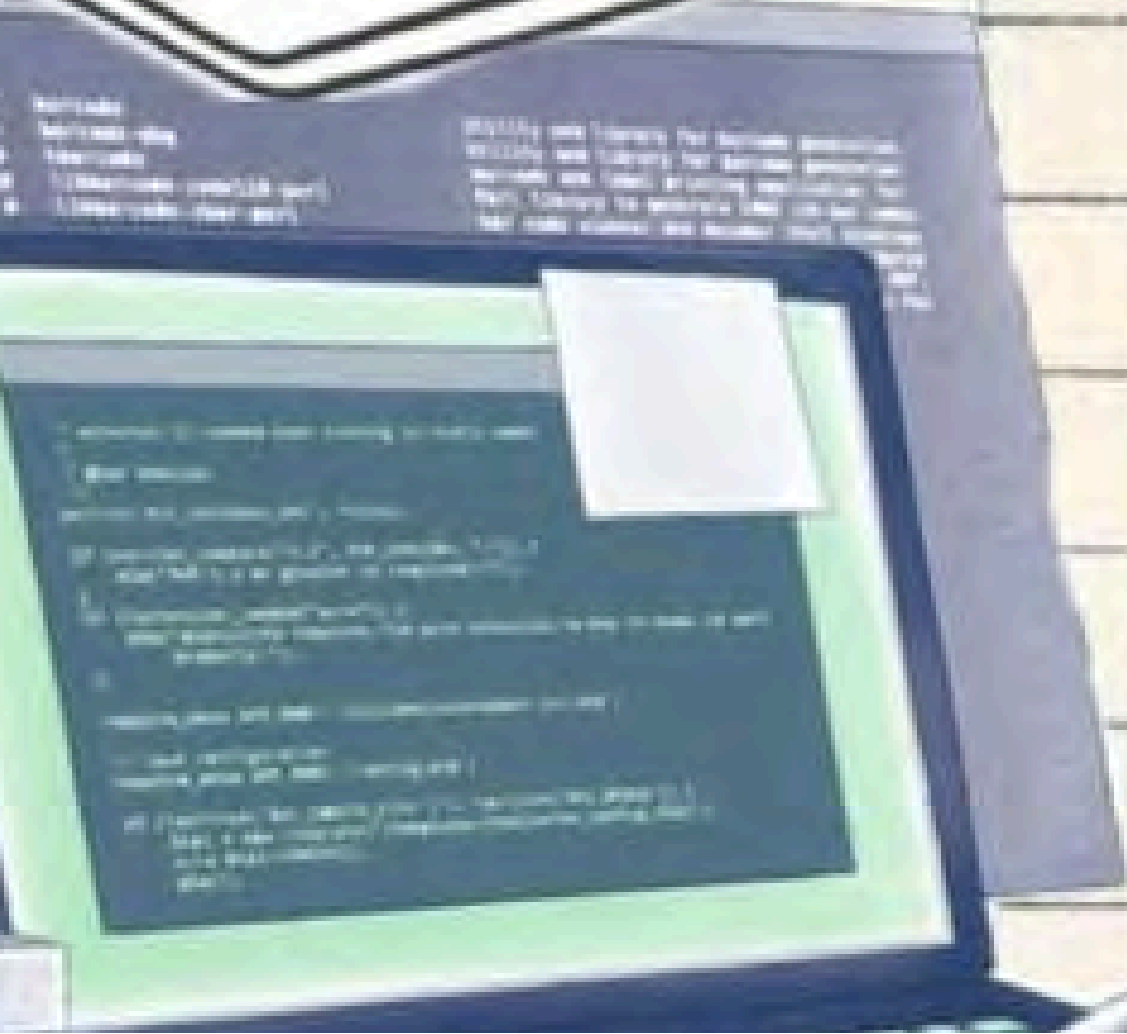
139 ARG.



ASSIGNMEN
UNIT 8

INSPIRATIONS & ICONS

प्रेरक व्यक्तित्व

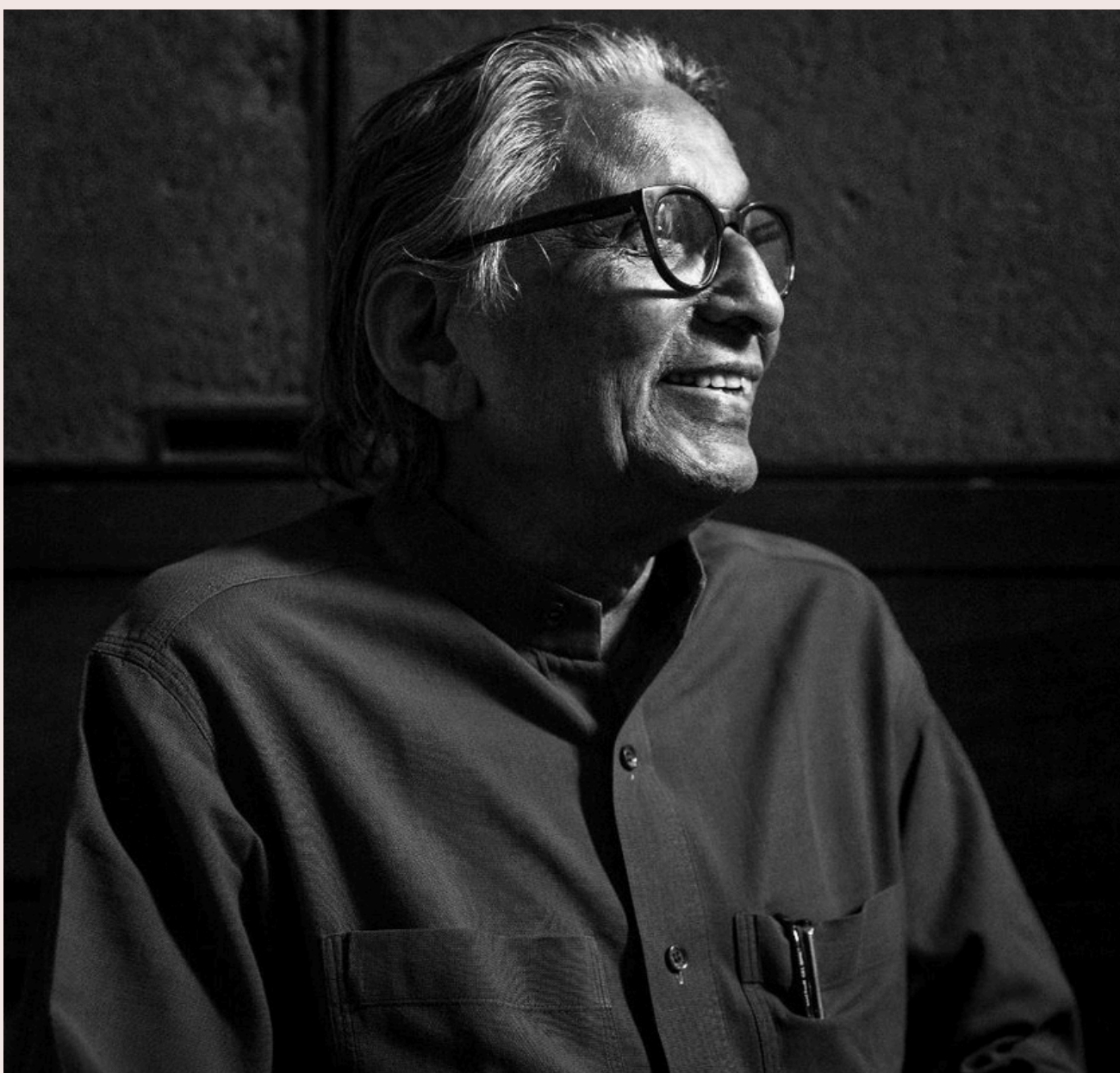


ART & ARCHITECTURE

BALKRISHNA DOSHI – A VISIONARY OF SUSTAINABLE ARCHITECTURE & HUMAN-CENTRIC DESIGN

“Architecture is a celebration of life.”

Balkrishna Vitaldas Doshi was one of India’s most celebrated architects, known for blending tradition with modern, sustainable design. Over seven decades, he championed human-centric architecture that responds to climate, culture, and community. His work emphasised affordability, natural ventilation, and lived experiences over mere aesthetics.



The Aranya Low-Cost Housing in Indore reflects his vision of dignified, community-focused living. As an educator, he shaped generations of architects to think socially and sustainably. In 2018, he became the first Indian to receive the Pritzker Architecture Prize. His legacy continues to inspire inclusive, thoughtful, and environmentally responsible architecture worldwide today.



DESIGN

RITU KUMAR – A PIONEER OF INDIAN FASHION & HERITAGE DESIGN

“Fashion is not just about clothes; it is about culture.”

Ritu Kumar is one of India’s most influential fashion designers, known for reviving traditional textiles and craftsmanship. She blended heritage techniques with modern aesthetics, preserving India’s cultural identity through design. By working with rural artisans, she restored dying crafts like handloom weaving and embroidery while creating sustainable livelihoods.



Her collections draw from Indian art, history, and architecture, transforming them into contemporary fashion. She played a key role in placing Indian fashion on the global stage, proving that tradition and innovation can coexist. Her legacy reflects creativity rooted in culture, sustainability, and timeless design excellence.



HEALTH SCIENCES

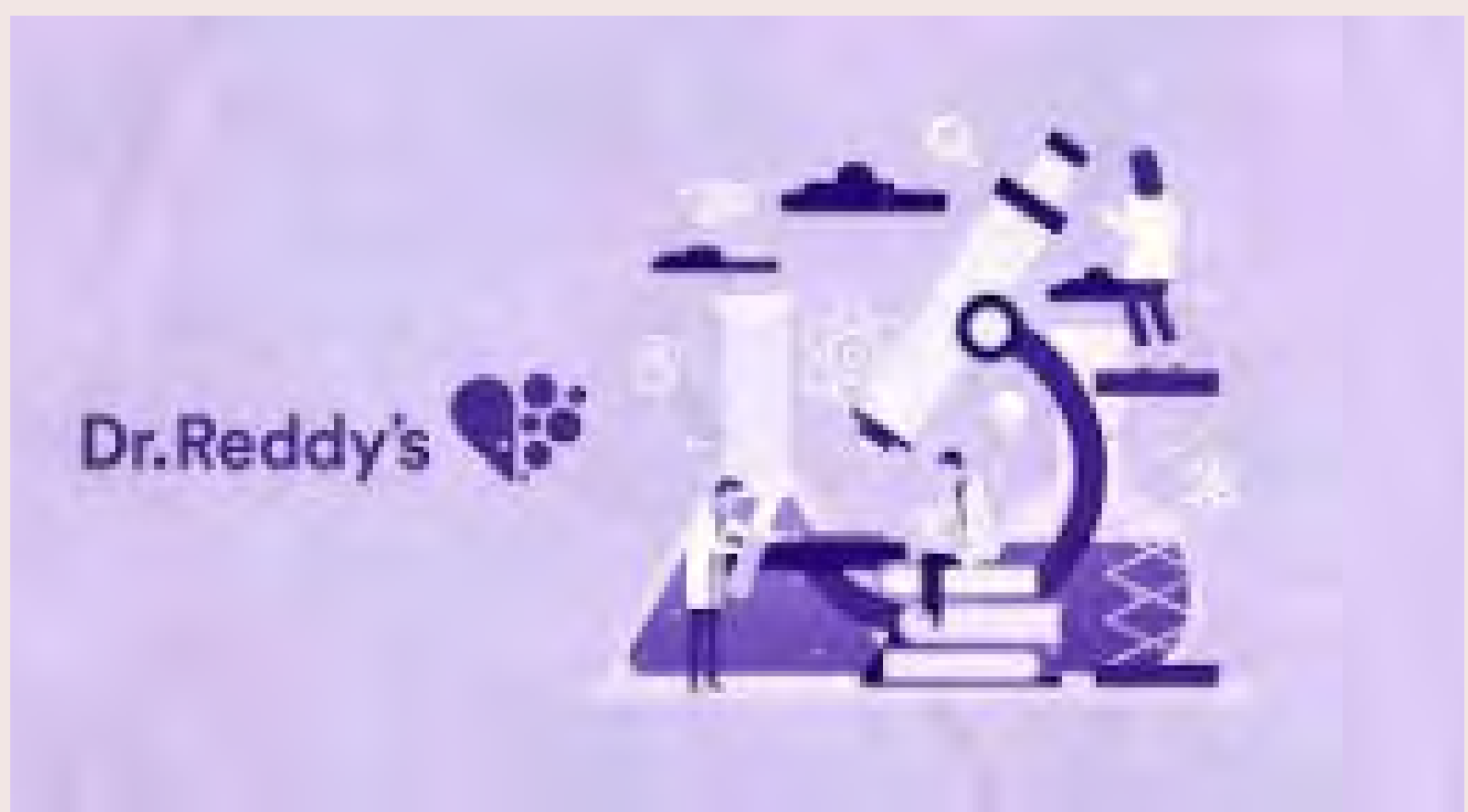
DR KALLAM ANJI REDDY – A PIONEER WHO TRANSFORMED INDIA’S PHARMACEUTICAL LANDSCAPE

“Healthcare is a fundamental right, not a privilege.”



D. Kallam Anji Reddy, founder of Dr. Reddy’s Laboratories, was a visionary who transformed India’s pharmaceutical industry into a global force. From humble beginnings in Andhra Pradesh, he championed affordable, high-quality medicines through innovation, generics, and research-driven solutions.

His work helped position India as the “pharmacy of the world,” making essential drugs accessible worldwide. Deeply committed to social impact, he also supported education, healthcare, and rural development through philanthropy.



His legacy reflects purpose-driven leadership, proving that science and enterprise can work together to improve lives and build a more equitable healthcare system.

ENGINEERING & TECHNOLOGY

SIR M. VISVESVARAYA – A PIONEER OF ENGINEERING EXCELLENCE & NATION-BUILDING

“Industrialise or perish.”

Sir Mokshagundam Visvesvaraya was one of India’s greatest engineers, known for his technical brilliance and disciplined leadership. Revered as the architect of modern Mysore, he transformed infrastructure through innovative irrigation and flood control systems, including the Krishna Raja Sagara Dam. As Diwan of Mysore, he promoted industrialization, education, and economic reforms, shaping a self-reliant society.

He believed engineering was a tool for nation-building, guided by precision, efficiency, and integrity.

His legacy continues to inspire generations, and his birthday, 15th September, is celebrated as Engineers’ Day in India



HOTEL MANAGEMENT

CAPTAIN C. P. KRISHNAN NAIR – A PIONEER OF LUXURY HOSPITALITY IN INDIA

“Hospitality is the art of making people feel special.”

Captain C. P. Krishnan Nair was a visionary leader who transformed India’s hospitality industry. As the founder of The Leela Group, he placed Indian luxury on the global map by blending heritage with world-class service. He believed hospitality was about creating memorable experiences through attention to detail, cultural warmth, and excellence.



His commitment to quality, strong systems, and skilled workforce training set new standards in hotel management. Starting later in life, his journey reflects resilience and strategic vision. His legacy continues to inspire professionals, emphasising that true success lies in service, innovation, and exceeding expectations.



LAW

DR. B. R. AMBEDKAR – THE ARCHITECT OF JUSTICE & CONSTITUTIONAL VISION

“Freedom of mind is the real freedom.”

Dr. Bhimrao Ramji Ambedkar was one of India’s greatest legal minds and the principal architect of the Constitution. A jurist, economist, and social reformer, he shaped democratic governance by embedding justice, equality, liberty, and fraternity into the nation’s framework.



He believed law must serve society, advocating for the rights of marginalised communities, women, and labourers. His emphasis on constitutional morality, education, and critical thinking strengthened India’s legal foundation. His legacy continues to guide the pursuit of justice and inclusive democracy, proving that law can be a powerful instrument of social transformation.



BUSINESS

DR. RATAN TATA – A SYMBOL OF ETHICAL LEADERSHIP & TRANSFORMATIVE MANAGEMENT

“Young entrepreneurs will make a difference in the Indian ecosystem.”

Dr. Ratan Tata is one of India’s most respected business leaders, known for transforming the Tata Group into a global powerhouse while upholding strong ethical values. His leadership emphasised integrity, innovation, and social responsibility. Through bold acquisitions like Jaguar Land Rover and Corus Steel, he positioned Indian enterprise on the global stage.



He believed in responsible risk-taking, as seen in the Tata Nano, aimed at affordable mobility. Beyond business, his commitment to philanthropy through Tata Trusts reflects his belief that companies must serve society. His legacy continues to inspire value-driven, compassionate, and visionary leadership.

“THIS PAGE CLOSES, BUT IMAGINATION STAYS OPEN.”

**INTERESTED IN BEING FEATURED IN OUR
NEXT EDITION? SEND YOUR WORK TO:**

sumedha@sushantuniversity.edu.in

Sushant
University

Golf Course Rd, Huda, Sushant Lok 2, Sector 55,
Gurugram, Haryana 122011

